thearyasamaj.org

ओ३म्

परोपकारिणी

पाक्षिक

परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष - ५७ अंक - ५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र मार्च (प्रथम) २०१५

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती

thearyasamaj.org

महर्षि के जीवन की झलकियाँ

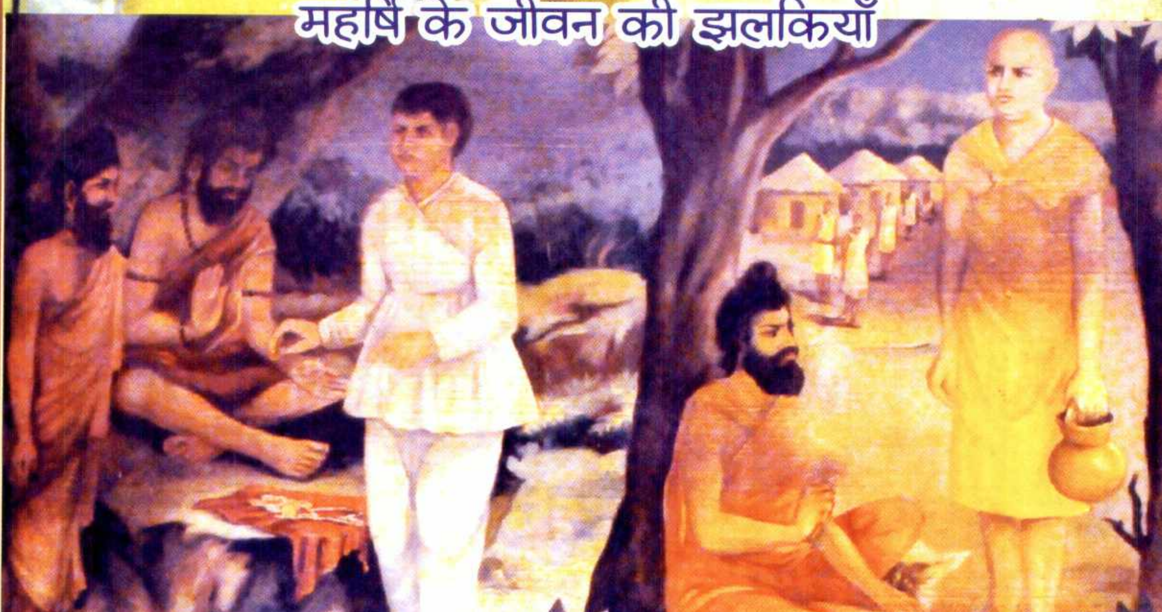

thearyasamaj.org

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५७ **अंक** : ५
दयानन्दाब्द: १९०
विक्रम संवत्: फाल्गुन शुक्ल, २०७१
कलि संवत्: ५११५
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११५

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।

विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.।

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९/५९

परोपकारी

मार्च प्रथम २०१५

अनुक्रम

१. विकास की तुलना में मुफ्त की.....	सम्पादकीय	०४
२. अनित्याशुचिदु:खानात्मसु नित्य......	स्वामी विष्वङ्	०७
३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	१४
४. दक्षिण भारत में आर्यसमाज का.....	डॉ. ब्रह्ममुनि	१९
५. पुस्तक-समीक्षा	सत्येन्द्रसिंह आर्य	२२
६. वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन		२४
७. रक्तसाक्षी पं. लेखराम ने क्या.....	राजेन्द्र जिज्ञासु	२६
८. ऊमर काव्य	ऊमरदान लालस	२८
९. जिज्ञासा समाधान-८२	आचार्य सोमदेव	३२
१०. स्तुता मया वरदा वेदमाता-५		३६
११. संस्था-समाचार		३८
१२. आर्यजगत् के समाचार		४१

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com

- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

thearyasamaj.org

सम्पादकीय

विकास की तुलना में मुफ्त की बिजली-पानी भारी

दिल्ली के चिरप्रतीक्षित चुनाव हो चुके। अप्रत्याशित चुनाव परिणामों ने सभी को आश्चर्यचकित कर दिया। जीतने वालों को भी ऐसी आशा नहीं थी, हारने वालों के मन में ऐसी कल्पना नहीं थी। यह जनता का जादू है। जनता ने चला दिया, सभी ठगे रह गये। चुनाव के बाद खूब विश्लेषण हुए, होते ही हैं। इन विश्लेषकों ने मोदी-केजरीवाल की कमी और विशेषतायें खूब गिनाई। मोदी के लिए कहा गया मोदी प्रधानमन्त्री बनकर जमीन भूल गये हैं, वे आसमान में उड़ रहे हैं। राष्ट्रीय समस्याओं को छोड़ अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं की बात कर रहे हैं। मोदी साथियों को धमाका रहे हैं, धर्मान्धता को बढ़ावा दे रहे हैं, हिन्दू धर्मान्धता के कारण ही मोदी की छवि खराब हुई है। मोदी को अनुचित शब्दावली प्रयोग के कारण जनता की नाराजगी झेलनी पड़ी है। मोदी अपने व्यक्तित्व को बनाने में लगे हैं आदि-आदि। इसके विपरीत केजरीवाल सरल हैं, कर्मठ हैं, सादगी पसन्द हैं, जनता के आदमी जनता की बात करते हैं आदि।

ये सब बातें चर्चा में है तो कम-अधिक इनका अस्तित्व तो होगा ही परन्तु जिन बातों से मनुष्य पर सीधा प्रभाव नहीं पड़ता तब तक मनुष्य अधिक नहीं बदलता। जब कोई बात मनुष्य के निजी हित को हानि पहुँचाती है तब ही वह तीव्र प्रतिक्रिया करता है। दूसरी परिस्थिति है यदि मनुष्य को कहीं अधिक लाभ दिखाई देता है तब भी वह अनायास उधर की ओर झुक जाता है। इस चुनाव में भी ये दो कारण निश्चित रूप से रहे हैं। जिन आलोचकों और विश्लेषकों ने कम ही ध्यान दिया है। मूल रूप से मोदी और केजरीवाल में कुछ भी नहीं बदला है। बदला तो मतदाता है मतदाता को प्रभावित करने वाले कारणों पर विचार करने से ये सब बात स्पष्ट हो जाती हैं।

दिल्ली के चुनाव परिणाम तो न भूतो न भविष्यति है। यदि इससे कुछ अधिक हो सकता है तो केवल तीन स्थान और केजरीवाल को मिल सकते थे उसके बाद तो होने को कुछ बचता ही नहीं। तीन स्थानों की कमी से जीत का महत्त्व किसी प्रकार कम नहीं होता, यह तो पूरी विधानसभा ही केजरीवाल की है। इस चुनाव परिणाम को देखकर स्वयं केजरीवाल को ही कहना पड़ा इतनी बड़ी सफलता देखकर तो डर लगता है। डर लगना स्वाभाविक है, यह परिणाम आशाओं का अम्बार लेकर आया है जिसे भगवान् भी पूरा नहीं कर सकता फिर केजरीवाल की तो बात ही क्या है।

हम समाज में जब होते हैं तब आदर्शवादी बन जाते हैं जब अकेले होते हैं तो स्वार्थी होते हैं। मनुष्य समूह में होता है तब आदर्श की बात करता है परन्तु जब व्यक्तिगत रूप से उसे किसी बात का निर्णय करना होता है तो वह स्वार्थी बनने में संकोच नहीं करता। मोदी देश की, समूह की, समाज की बात करते रहे, दूसरी ओर केजरीवाल शुद्ध रूप से व्यक्तिगत लाभ की बातें की। चुनाव से एक-दो दिन पहले की बात है, दिल्ली मेट्रो में यात्रा करते हुए सुनने को मिला, चर्चा स्वाभाविक रूप से चुनाव की थी, खड़े एक व्यक्ति ने कहा भाई केजरीवाल आया तो दाल एक सौ बीस से अस्सी रूपये हो जायेगी और पानी फ्री मिलेगा। इस मनुष्य के अन्दर सस्ती दाल और मुफ्त पानी का उत्साह देखते ही बनता था। वहाँ से केजरीवाल अच्छा है या बुरा है। ये नीति देश और समाज के हित में कैसी है? इन सब बातों पर विचार करने का अवसर ही कहाँ था?

मनुष्य कितना भी पढ़-लिख जाये या कितनी भी धोखा खा जाये परन्तु धोखे का अवसर आने पर वह लाभ की इच्छा को पूरा करने के लिए धोखा खाना स्वीकार कर लेता है। केजरीवाल ने व्यक्ति लाभ की पचासों घोषणाएँ कर डाली। इस चुनाव में केजरीवाल ने ५०० नये स्कूल, २० डिग्री कॉलेज, ३००० स्कूलों में खेल मैदान, ५०० नई बसें, डेढ़ लाख सीसी टीवी कैमरे, दो लाख शौचालय, झुग्गी वालों के लिये फ्लैट और आधी दरों पर बिजली-पानी देने का वादा किया है, जिन्हें एक आदमी अपने लिये आवश्यक समझता है। इसीलिए उसे लगता है यही व्यक्ति उसके लिए सबसे उपयुक्त है।

केजरीवाल कहते हैं दिल्ली को पूर्ण राज्य का स्तर दिलायेंगे। अधूरे राज्य की अपनी समस्यायें हैं। यह ठीक बात है। आज दिल्ली के निर्णय केन्द्र सरकार गृह मन्त्रालय करता है। पुलिस गृह मन्त्रालय के आधीन है। केजरीवाल ने अपने पिछले कार्यकाल में जिस पुलिस अधिकारी का तबादला करने के लिए मुख्यमन्त्री होकर धरना तक दिया परन्तु उस अधिकारी का वे स्थानान्तरण नहीं करा सके।

thearyasamaj.org

इसी प्रकार बड़े अधिकारियों की नियुक्ति और उनपर कार्यवाही दिल्ली मुख्यमन्त्री नहीं कर सकता। इन परिस्थितियों में कोई भी मुख्यमन्त्री और उसकी सरकार चाहेगी उसे पूर्ण अधिकार मिले। सत्ता पर उसकी पूरी पकड़ हो। भारत के किसी कोने में ऐसी परिस्थिति हो तो दिल्ली को पूर्ण राज्य का स्तर देना सरल है परन्तु दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा दिया जाना इस कारण सम्भव नहीं होगा कि दिल्ली में दो सरकारें हैं एक है केन्द्र की सरकार और दूसरी होगी दिल्ली की सरकार, दोनों में से दिल्ली में किसका अधिकार होगा। आज दिल्ली की सरकार केन्द्र पर निर्भर है कल दिल्ली को पूर्ण राज्य का अधिकार दिये जाने पर केन्द्र सरकार को दिल्ली में किरायेदार की स्थिति में रहना पड़ेगा। आज दिल्ली पूरे देश की राजधानी है, केन्द्र सरकार पर पूरे देश का अधिकार है। यह केन्द्र की राजधानी होने से अन्तर्राष्ट्रीय अतिथियों के आने का स्थान है, ऐसी परिस्थिति में उनकी व्यवस्था केन्द्र सरकार करेगी या दिल्ली की सरकार। अन्तिम और महत्त्वपूर्ण बात है मतभेद होने पर किसका आदेश मान्य होगा। आज पुलिस या प्रशासन केन्द्र के अनुसार चलता है, दिल्ली को पूर्ण राज्य का अधिकार मिलने पर जैसे राज्य के मन्त्री और विधानसभा सदस्य थानेदार पर रोब डालकर कार्य कराते हैं तब पुलिस के काम करने की क्या शैली होगी यह विचारणीय है। हमें इतिहास भी देखना चाहिए जब रूस का विधान हुआ तब ......मास्को में किन्तु गोर्बचोव का केन्द्र सरकार के पास अपना शासन चलाने के लिए कोई स्थान नहीं था। मास्को की सरकार ने संसद के निर्णयों को मानने से इन्कार कर दिया था तथा संसद पर तोप के गोले दागे थे। जहाँ दो समान अधिकारी होंगे वहाँ संघर्ष की सम्भावना तो सदा ही बनी रहेगी। यह परिस्थिति केन्द्र सरकार की जानकारी में न हो यह सम्भव तो नहीं है फिर केजरीवाल दिल्ली को पूर्ण राज्य अधिकार कैसे दिलायेंगे। आज दिल्ली में दिल्ली की सरकार और दिल्ली नगर निगम में विरोधी पार्टी की सत्ता है, उसमें प्रशासन और सामान्य जन उलझा होगा यह सोचा जा सकता है। इस प्रकार की सारी समस्याओं के रहते दिल्ली की केजरीवाल सरकार कितनी सफल होती है यह तो समय ही बतायेगा।

जिस प्रकार एक सामान्य व्यक्ति में उसकी दैनिक असुविधाओं को दूर करने की आशा केजरीवाल में दिखाई दी उसी प्रकार मोदी सरकार के आने से जिनको हानि हुई वे भी मोदी को अपना मत क्यों देंगे। उनमें दो वर्ग मुख्य है एक है किसान और दूसरा व्यापारी। ये दोनों ही मोदी सरकार से दु:खी हैं। मोदी के शासन में आने के समय जनता मंहगाई से दु:खी थी और मंहगाई तेजी से बढ़ रही थी। मंहगाई का मुख्य कारण बाजार में सामान की कमी है, देश से खाद्य वस्तुओं का निर्यात बड़ी मात्रा में हो रहा था अत: मंहगाई का बढ़ना निरन्तर जारी था, मोदी सरकार ने बहुत सारी वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगा दिया जिसके परिणाम स्वरूप वस्तुओं के मूल्य गिर गये। इससे सामान्य जनता को भले ही लाभ हुआ परन्तु व्यापारी को लाभ कैसे होता? व्यापारी को लाभ तो तब होगा जब बाजार में वस्तु मंहगे दाम पर बिके। इसके साथ ही व्यापारी मंहगे दाम पर बेच नहीं सकता तो वह किसान से मंहगे दाम पर खरीदेगा कैसे? इससे किसान को भी अपना माल व्यापारी को सस्ते दाम पर ही बेचना होगा। ऐसे व्यापारी और किसान मोदी का समर्थन कैसे करेंगे? यह विचारणीय होगा।

केजरीवाल का सारा जोर गैर भाजपा सरकार पर केन्द्रित रहा, दिल्ली के चुनाव के कुछ समय पूर्व दिल्ली के गिरजाघरों पर लूटपाट व तोड़-फोड़ की घटनायें होना और चुनाव से दो दिन पहले दिल्ली के चर्च और केजरीवाल के तत्त्वावधान में धरना प्रदर्शन करना, ठीक उसी समय अमेरिका के राष्ट्रपति बराक ओबामा का भारत में बढ़ती हुई धार्मिक असहिष्णुता के बारे में वक्तव्य देना। यह आकस्मिक संयोग नहीं है। इसी तरह दिल्ली में अल्पसंख्यकों का ३२ सीटों पर प्रभाव है उनका निर्णायक रूप से केजरीवाल के साथ जाना, यह एक सुनियोजित कार्यक्रम की ओर संकेत करते हैं।

दिल्ली के चुनाव में पराजय के बहुत सारे कारण हैं, वहाँ एक सामाजिक कारण भी है दिल्ली में ग्रामीण क्षेत्र के किसानों में जाट मतदाता बड़ी संख्या में हैं परिणामों को देखने से पता लगता है कि वे जहाँ किसान होने से घाटे में हैं अत: मोदी विराधी हैं, वहीं जाट मतदाताओं में एक और प्रतिक्रिया भी देखने में आयी है, वह है हरियाणा का मुख्यमन्त्री गैर जाट को बनाना। राजनीति की दृष्टि से हरियाणा में मोदी को गैरजाट मतदाताओं ने ही विजय दिलाई है, अधिकांश जाट मतदाता चौटाला और हुड्डा में बंटा हुआ था। अत: मत विभाजन से इतर जातियों के मत निर्णायक बन गये। इसीलिए सरकार भी उन्हीं की बनी परन्तु जाट बहुल क्षेत्र में इतर जातियों का वर्चस्व इस समुदाय को सहज स्वीकार्य नहीं हुआ। इसका प्रभाव भी दिल्ली के

thearyasamaj.org

चुनावों में देखा जा सकता है। इन चुनावों में भाजपा के हार की चर्चा की जा रही है, उनमें एक है पार्टी में चुनाव को लेकर गलत निर्णय लिये। इसमें किसी को भी सन्देह नहीं रहना चाहिए कि दुर्घटना गलत निर्णय का ही परिणाम होता है। मूल्यांकन में भूल कहीं भी हुई हो परिणाम तो गलत आयेगा ही। इसके अतिरिक्त इस चुनाव में ध्यान देने की बात है जो लोग मोदी के नकारात्मक चुनाव की आलोचना कर रहे हैं वे वास्तव में मोदी के नकारात्मक प्रचार के सूत्रधार हैं। मोदी प्रधानमन्त्री बन गये यह तो ठीक है परन्तु जिनको मोदी का प्रधानमन्त्री बने रहना रास नहीं आ रहा, उन समाचार पत्रों, दूरदर्शनतन्त्र संचालकों की तथा समाचार समीक्षकों की कमी नहीं है। उदाहरण के लिए ये समालोचक मोदी की हार के लिए संघ के घर वापसी या धर्मान्तरण की घटनाओं की गला फाड़कर आलोचना करते हैं, वे अमेरिकी राष्ट्रपति की भारत विरोधी आलोचना की निन्दा करने के स्थान पर मोदी के विरोध में उस कथन को प्रमाण मानने में गौरव का अनुभव करते हैं। कोई हिन्दू ईसाई या मुसलमान बनता है तो उसे धर्मपरिवर्तन का अधिकार वैयक्तिक स्वन्त्रता कहा जाता है, उसके विपरीत यदि कोई ईसाई हिन्दू बन जाये तो इसे साम्प्रदायिक संकीर्णता घोषित कर दिया जाता है। यह दोहरापन इसी कारण है कि इन लोगों की निष्ठा न अपने देश के प्रति है, न अपने धर्म के प्रति, इनकी निष्ठा तो इन्हें सुविधा और साधन उपलब्ध कराने वालों के प्रति है जो देश और संगठन इस समाचार तन्त्र को बड़ी मात्रा में धन राशि उपलब्ध कराते हैं, ये समाचार पत्र, चैनल उन्हीं का पक्ष लेते हैं, उन्हीं का गुणगान करते हैं। न तो मोदी ने अपना दृष्टिकोण बदला है और न ही केजरीवाल ने फिर यह जीत-हार का इतना बड़ा अन्तर आया तो कैसे? यह परिस्थिति उसकी व्याख्या करती है जो लोग जिन कारणों से केजरीवाल का विरोध करते थे, तो क्या केजरीवाल बदल गये हैं? केजरीवाल के विचार तो वही है, चाहे विदेशी धन लेने का हो या मुसलमानों के तुष्टिकरण का। बदला तो केवल मतदाता का मन है। यह चुनाव जनता की विजय है, वह जिसको चाहे हरा दे, जिसको चाहे जिता दे परन्तु राष्ट्रीयता की दृष्टि से देखें तो यह जीत तुष्टिकरण को बढ़ावा देने वाली और राष्ट्रीय विचारधारा को दुर्बल करने वाली है। अन्ततोगत्वा दिल्ली की जनता ने जो किया है उसका आदर ही करना चाहिए। वेद ने कहा है जो दिल में है वह कब बदल जाये कहा नहीं जा सकता। दूसरा क्या सोचता है अपने निश्चय को कब बदल देता है निश्चयपूर्वक कहा नहीं जा सकता, अतः कहा गया है-

अन्यस्य चित्तमभिसंचरेण्यमुताधीतं विनश्यति।

- धर्मवीर

आर्यों की आशा का केन्द्र - परोपकारिणी सभा

यह आनन्ददायक सूचना देते हुए हमें हर्ष होता है कि धरती तल के सब वेदाभिमानी आर्यों का आशा केन्द्र इस समय ऋषि जी द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा है। देशभर के धर्मनिष्ठ, जातिभक्त आर्यसमाजेतर धर्माचार्य धर्म-रक्षा के लिए निरन्तर सभा के सम्पर्क में रहते और परोपकारी पाक्षिक के नियमित पाठक हैं। अमेरिका, इंग्लैण्ड, फ्रान्स, जर्मनी से आर्य भाई चलभाष द्वारा सभा के विद्वानों से धर्मचर्चा व शंका समाधान करते रहते हैं। इस समय संक्षेप से इतनी ही जानकारी देते हुए हमें हर्ष होता है। फिर कभी पूरा समाचार दिया जायेगा।

सभा के पास इस समय सर्वाधिक विद्वान् हैं जो पूरा वर्ष अनुसन्धान व प्रचार में लगे रहते हैं। सभा शोध करने वालों को पूरा सहयोग देती व मार्गदर्शन करती है। हम अथक कार्य करके भी सन्तुष्ट नहीं हैं। घना कोहरा व घोर अन्धकार अनेक धर्म रक्षक योद्धाओं की सेवायें माँगता है। एक-एक आर्य अपने कर्त्तव्य को समझे और सभा से जुड़े।

सभा धर्म पर होने वाले आक्रमण का प्रतिकार करने में प्रतिपल तत्पर है। पं. श्रद्धाराम का नाम लेकर ऋषि पर घिनौना आक्रमण करने वाली पुस्तक का सभा ने सूचना पाते ही परोपकारी में उत्तर दिया। इसी विषय पर एक खोजपूर्ण पुस्तक तैयार करवाकर सभा ने छपने दे दी है।

पुस्तक के प्रकाशन में एक आर्य दानी ने सहयोग किया है। समाजें आगे आयें। इसका बहुत प्रचार-प्रसार करके अपने जीवन का परिचय दें।

- मन्त्री परोपकारिणी सभा, अजमेर

thearyasamaj.org

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचिसुखात्मख्यातिरविद्या-५

- स्वामी विष्वङ्

महर्षि पतञ्जलि ने पिछले तीसरे सूत्र में क्लेशों के पाञ्च प्रकारों की चर्चा की है और चौथे सूत्र में अस्मिता आदि क्लेशों का आधार- उत्पत्ति स्थान- कारण के रूप में अविद्या को बताया। इसके साथ-साथ क्लेशों की चार अवस्थाओं (प्रसुप्त आदि) का वर्णन भी किया है। यहाँ प्रस्तुत सूत्र में अविद्या का स्वरूप (लक्षण) बताया जा रहा है। इस सूत्र की भूमिका के रूप में महर्षि वेदव्यास कहते हैं- '**तत्राविद्यास्वरूपमुच्यते**।' अर्थात् उन पाञ्चों क्लेशों में से जो पहला क्लेश अविद्या है उसके स्वरूप का कथन करते हैं। यहाँ ऋषि ने '**स्वरूपम्**' शब्द से परिभाषा का संकेत किया है अर्थात् अविद्या की यह परिभाषा है जो स्वयं सूत्रकार करते हैं। वह इस प्रकार है कि अनित्य वस्तुओं को नित्य समझना, अशुद्ध वस्तुओं को शुद्ध समझना, दुःखदायी वस्तुओं को सुखदायी समझना और अनात्मा- जड़ वस्तुओं को आत्मा-चेतन समझना ही अविद्या नामक क्लेश है। इसे उल्टा करके भी समझ सकते हैं अर्थात् नित्य को अनित्य, शुद्ध को अशुद्ध, सुख को दुःख और चेतन को जड़ समझना भी अविद्या है।

महर्षि वेदव्यास प्रस्तुत सूत्र की व्याख्या करते हुए लिखते हैं- '**अनित्ये कार्ये नित्यख्यातिः**।' अर्थात् अनित्य कार्य पदार्थ को नित्य समझना अविद्या का पहला विभाग है। अनित्य उसे कहते हैं जो उत्पन्न होता है और जो उत्पन्न होता है वह नष्ट भी होता है। परन्तु मनुष्य उत्पन्न होने वाले उस अनित्य पदार्थ को नित्य समझता है, इसी को अविद्या कहते हैं। यह सार्वभौम सिद्धान्त है कि जो-जो उत्पन्न होता है वह-वह नष्ट भी होता है। हाँ, यह अलग बात है कि कोई वस्तु शीघ्र नष्ट होती है, कोई देर से नष्ट होती है और कोई बहुत लम्बे काल के बाद नष्ट होती है। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि वस्तु उत्पन्न तो हो गई है पर नष्ट नहीं होगी। संसार में कुछ ऐसे पदार्थ हैं जिनको हम देखते हुए आ रहे हैं। हमारे जीवन के पचास, साठ, सत्तर, अस्सी, नब्बे और सौ वर्ष व्यतीत हो गये हैं फिर भी वे वस्तुएँ वैसी की वैसी बनी हुई हैं। इतना ही नहीं हमारे माता, पिता, दादा, दादी, परदादा आदि ने भी उनको वैसा ही विद्यमान देखा जैसा आज हम देख रहे हैं। पिछले इतिहास को देखते हैं तो पता चलता है कि २००, ५००, १०००, २०००........ लाखों वर्ष हुए हैं रामायण का काल तब भी वे वस्तुएँ थी और आज भी वे ही वस्तुएँ हैं। इससे ऐसा लगता है कि वे वस्तुएँ नष्ट नहीं होती हैं। परन्तु ऐसा नहीं? क्योंकि उत्पन्न वस्तु मात्र विनाश को प्राप्त होने वाली है।

ऐसी कौनसी वस्तुएँ हैं जिनको लाखों वर्षों से देखते हुए आ रहे हैं जो तो अनित्य हैं परन्तु हमें नित्य के समान दिख रहीं हैं? इसका समाधन करते हुए महर्षि वेदव्यास लिखते हैं-

तद्यथा ध्रुवा पृथिवी, ध्रुवा सचन्द्रतारका द्यौः,
अमृता दिवौकस इति।

अर्थात् पृथिवी, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र आदि, द्यु लोक ये सब नित्य हैं सदा रहने वाले हैं। ये सब कभी नष्ट नहीं होंगे, ऐसा मनुष्य समझता है क्योंकि इन सब को लाखों वर्षों से पीढ़ि दर पीढ़ि देखते हुए आ रहे हैं। इसलिए इनको मनुष्य नित्य समझता है, ऐसा समझना अविद्या इसलिए है कि ये नष्ट होंगे, क्यों? क्योंकि उत्पन्न हुए हैं। जो उत्पन्न होता है वह नष्ट भी होता है यह सिद्धान्त है। यदि नष्ट होता है, तो अब तक नष्ट नहीं हुआ तो आगे भी नष्ट नहीं होगा, ऐसा समझना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि जो उत्पन्न होता है वह नष्ट भी होगा। हाँ, पृथिवी, चन्द्रमा, सूर्य, नक्षत्र, द्यु लोक आदि ऐसे पदार्थ हैं जो लम्बे काल तक रहते हैं। इनकी अवधि (वेद आदि सत्य सनातन ग्रन्थों के आधार पर) चार अरब बत्तीस करोड़ वर्ष तक है। तब तक ये पदार्थ रहेंगे उस अवधि से पहले नष्ट नहीं होंगे। इसलिए पृथिवी आदि पदार्थ अनित्य हैं, इन्हें नित्य मानना अविद्या है। जो लोग यह तर्क देते हैं कि लाखों वर्षों से पृथिवी आदि को पीढ़ि दर पीढ़ि देखते हुए आ रहे हैं, इसलिए आगे भी नष्ट नहीं होंगे। उनका यह तर्क प्रमाणों से विरुद्ध होने से मान्य नहीं हो सकता।

कारण यह है कि प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध होता है कि उत्पन्न पदार्थ नष्ट होते हैं। रही बात पृथिवी आदि की ये पदार्थ भी निरन्तर ह्रास को प्राप्त हो रहे हैं। पृथिवी में, चन्द्रमा में, सूर्य में सभी उत्पन्न पदार्थों में न्यूनता (कमी) प्रत्यक्ष देखी जा सकती है। जिस पदार्थ में ह्रास देखा जा रहा हो वह नित्य कभी नहीं हो सकता। क्योंकि नित्य उसे कहते हैं जिसमें किसी भी प्रकार से न्यूनता नहीं आ सकती।

thearyasamaj.org

जो एक रस रहे, जिसमें परिवर्तन न हो, वही पदार्थ नित्य हो सकता। परन्तु पृथिवी आदि पदार्थ परिवर्तनशील है, उनमें न्यूनता आ रहीं है। प्रतिदिन घटते जा रहे हैं ऐसे पदार्थों को नित्य नहीं कह सकते। फिर भी कोई इन्हें नित्य मानता है, तो वह अविद्या है। महर्षि वेदव्यास ने उदाहरण देते हुए यह भी लिखा है कि कैसे अनित्य को नित्य समझता है उदाहरण है '**अमृता दिवौकसः।**' अर्थात् देवगण अमर होते हैं, वे मरते नहीं हैं। दिवौकसः का अभिप्राय है विद्वान्। ऐसा विद्वान् जो विशेष उपलब्धियों को प्राप्त किया हो- जैसे समाधि लगा-लगा कर अनेक सिद्धियों को प्राप्त किया- इन्द्रियजित्, भूतजयी आदि अनेक सिद्धियाँ हैं जिनको सिद्ध करके योगी बन जाते हैं। ऐसे योगियों को देवता-देव या दिवौकस कहते हैं। इनके सम्बन्ध में लोगों को भ्रान्ति होती है कि ये अमर हो गये, ये मृत्यु को प्राप्त नहीं होंगे। ऐसा समझना अविद्या है। क्योंकि जो शरीर धारण करता है वह शरीर को छोड़ता भी है अर्थात् मृत्यु भी होगी। ऐसा कभी नहीं हो सकता कि जन्म तो हो गया पर मृत्यु नहीं होगी।

हाँ, जो योगी असम्प्रज्ञात समाधि लगा कर क्लेशों को नष्ट कर देता है, वह शरीर के छूट जाने (मृत्यु होने) पर दुबारा जन्म नहीं लेता है। वह बार-बार जन्म-मरण के चक्र से छूट जाता है। ऐसे योगी के लिए कहा जाता है कि वह अमर हो गया अर्थात् वह बार-बार मृत्यु को प्राप्त नहीं होगा। यह ही अमर होने का अभिप्राय है। इसके विपरीत कोई समझे कि शरीर तो धारण किया पर अब उसकी मृत्यु नहीं होगी, ऐसा कभी नहीं हो सकता। फिर भी कोई ऐसा समझता है कि वह नहीं मरेगा, तो वह अविद्या है। संसार में प्रत्येक मनुष्य अन्य मनुष्यों को मरते हुए देखते हैं फिर भी यह मानते हैं कि मैं नहीं मरूँगा अर्थात् अनित्य शरीर को नित्य मानना यह बहुत बड़ी अविद्या है। यद्यपि मनुष्य शब्दों से कथन अवश्य करता है पर स्वयं को बचा कर कथन करता है। इस सम्बन्ध में महाभारतकार महर्षि वेदव्यास लिखते हैं-

अहन्यहनि भूतानि गच्छन्तीह यमालयम्।
शेषाः स्थावरमिच्छन्ति किमाश्चर्यमतः परम्।।

- महाभारत ३.२४.८१

अर्थात् प्रत्येक दिन कोई न कोई मनुष्य मृत्यु को प्राप्त होता है। इस विशाल ब्रह्माण्ड में कितने लोग मर रहे हैं, उन्हें कितने लोग देख रहे हैं। परन्तु जो लोग मरने वालों को देखते हुए भी अपने आपको बचाके रखते हैं कि हम नहीं मरेंगे। यह उनकी मन की बात है वे यद्यपि वाणी से तो बोलते हैं कि हम भी मरेंगे पर मन में नहीं मरेंगे ऐसा भाव रखते हैं। इससे बढ़कर और आश्चर्य क्या हो सकता है। जो उत्पन्न शरीर को नित्य मान रहा हो यह अविद्या है। अविद्या के चार भागों में यह पहला विभाग है अनित्य को नित्य मानना।

अविद्या के दूसरे विभाग की व्याख्या करते हुए महर्षि वेदव्यास लिखते हैं-

तथाऽशुचौ परमबीभत्से काये।

अर्थात् जिसप्रकार से अनित्य को नित्य मानना अविद्या है उसी प्रकार अशुचि (अशुद्ध) को शुचि (शुद्ध) मानना अविद्या है। इसके लिए उदाहरण दिया है '**परमबीभत्स काय**' अर्थात् अत्यन्त घृणित शरीर को शुद्ध मानना अविद्या है। मनुष्य शरीर को शुद्ध मानता है, इसलिए शरीर के प्रति आकृष्ट होता है। परन्तु यथार्थता में शरीर अत्यन्त अशुद्ध है। मनुष्य का आकर्षण शरीर के प्रति होता है। शरीर में रहने वाले आत्मा के प्रति नहीं होता। यदि आत्मा के प्रति आकर्षण होता, तो अशुद्ध शरीर वाले के प्रति भी होना चाहिए परन्तु ऐसा नहीं होता। इसका अभिप्राय है कि मनुष्य आत्मा के प्रति आकर्षित न होकर शरीर के प्रति आकर्षित होता है। इससे पता लगता है कि मनुष्य अशुद्ध शरीर को शुद्ध मानकर आकर्षित होता है, यह ही अविद्या है। मनुष्य शरीर को स्नान कराकर, वस्त्र पहनवाकर, तेल, पाऊडर, इत्र आदि से शरीर को सुन्दर-शुद्ध दिखाता है। परन्तु कितना ही स्नान करो या सुन्दर-सुन्दर वस्त्र धारण करो, तेल, पाऊडर, इत्र आदि लगाओ कुछ भी करो परन्तु शरीर तो अशुद्ध ही रहेगा। इसे समझने के लिए एक लौकिक उदाहरण देख लेवें- एक पैकेट में '**मल**' भरकर उसके ऊपर अच्छे से रेपर (कवर) लगा दें, तो वह ऊपर से तो शुद्ध दिखाई देगा परन्तु उस पैकेट को जानने वाला उसे कभी शुद्ध नहीं मानता। परन्तु उसे न जानने वाले उसे सुन्दर-अच्छा-शुद्ध समझने लगते हैं। ऐसा समझना अविद्या है। शरीर भी उस अशुद्ध पैकेट के समान अशुद्ध है, फिर भी मनुष्य उसे शुद्ध मानता है यह अविद्या का दूसरा विभाग है। शरीर किस प्रकार अशुद्ध है इस बात को स्पष्ट करते हुए महर्षि कहते हैं- **उक्तञ्च**

स्थानाद् बीजादुपष्टम्भान्निः स्यन्दान्निधनादपि।
कायमाधेयशौचत्वात्पण्डिता ह्यशुचिं विदुः।।

अर्थात् शरीर किस प्रकार से अशुद्ध है, इस बात को लेकर अन्य ऋषियों ने कहा है- **स्थानाद्**= माता का उदर

thearyasamaj.org

उत्पन्न होने वाले शरीर का निवास स्थान है, उस स्थान को देखा जाये, तो अत्यन्त मलिन दिखाई देगा, ऐसे मलिन स्थान से शरीर उत्पन्न होता है। **बीजाद्**= माता और पिता का रज व वीर्य उत्पन्न होने वाले शरीर का बीज या मूल कारण है। उस रज व वीर्य को देखा जाये, तो वह भी मलिन है, उस मलिन बीज से शरीर उत्पन्न होता है। **उपष्टम्भात्** = शरीर का **उपष्टम्भ**= आधार रस, रक्त, मांस आदि। इन्हें देखा जाये, तो अशुद्ध पायेंगे। इस कारण भी शरीर अशुद्ध है। **निःस्यन्दात्** = शरीर से बहने वाले तरल पदार्थ पसीना, मल, मूत्र। आँख, कान, नाक, मूँह सब स्थानों से रोम-रोम से अशुद्धि निकलती है। इसकारण भी शरीर अशुद्ध कहाता है। **निधनाद्+अपि**= और मृत्यु होने पर भी शरीर से दुर्गन्ध निकलती है। मृत्यु से पहले चाहने वाले निकटस्थजन उस शरीर को शीघ्र नष्ट करने के लिए प्रयत्न करते हैं। इसप्रकार से शरीर अशुद्ध ही है। इतना ही नहीं शरीर को किसप्रकार से व्यक्ति शुद्ध करने का प्रयत्न करता है, इस बात को लेकर भी कहा जा रहा है - **कायमाधेयशौचत्वात्** = मनुष्य प्रातःकाल जागने से लेकर रात्री में शयन पर्यन्त अनेक बार शुद्ध करने का प्रयत्न करता रहता है। फिर भी शरीर शुद्ध नहीं रह पाता है। इसलिए **पण्डिता हि आशुचिं विदुः**= पण्डित (योगी) इस शरीर को निश्चित रूप से अशुद्ध-अपवित्र-मलिन मानते हैं। ऐसे शरीर को मनुष्य शुद्ध मानता है, यह अविद्या है।

इत्यशुचौ शरीरे शुचिख्यातिर्दृश्यते।

अर्थात् इसप्रकार इस अत्यन्त अशुद्ध शरीर को मनुष्य देख कर शुद्ध मान कर आकृष्ट होता है। यह अविद्या का दूसरा विभाग है। मनुष्य किसप्रकार अशुद्ध शरीर को शुद्ध मानकर आकृष्ट होता है। इसका वर्णन महर्षि ने उदाहरण देकर स्पष्ट किया है-

नवेव शशाङ्कलेखाकमनीयेयं कन्या मध्वमृतावयव-निर्मितेव चन्द्रं भित्त्वा निःसृतेव ज्ञायते, नीलोत्पलपत्रायताक्षी हावगर्भाभ्यां लोचनाभ्यां जीवलोकमाश्वासयन्तीवेति कस्य केनाभिसम्बन्धः भवति चैवमशुचौ शुचिविपर्यासपत्यय इति।

अर्थात् मनुष्य कामना से प्रेरित होकर किसी स्त्री शरीर के विषय में इसप्रकार की कल्पना करता है कि मानो यह सुन्दर कन्या चद्रमा की नवीन कला के समान है। मानो ऐसा लगता है मधु और अमृत के अंशों से बनी हुई है। ऐसा लगता है कि यह कन्या चन्द्रमा=चन्द्रबिम्ब को फोड़कर निकली है। जिसप्रकार नीलकमल के पत्ते होते हैं उसीप्रकार विशाल आँखों वाली यह कन्या शृंगार के हावभावों से पूर्ण आँखों से मानो मनुष्य जाति को आश्वासन देती हुई सम्मुख विद्यमान है। इस कन्या का किस भाग्यशाली पुरुष के साथ किन शुभ कर्मों के कारण सम्बन्ध होगा? इसप्रकार अत्यन्त अशुद्ध शरीर में शुद्ध बुद्धि रखना अविद्या है। यहाँ पर कोई ऐसा न विचार करे कि केवल पुरुष ही ऐसा स्त्री के प्रति विचार करता है अपितु स्त्री भी पुरुष के प्रति अपनी कल्पना करती है। इसलिए पुरुष स्त्री के प्रति और स्त्री पुरुष के प्रति आकृष्ट होते रहे हैं। यह आकर्षण शरीरों के प्रति होता है आत्माओं के प्रति नहीं। इसकारण यह अविद्या कहलाती है।

एतेनापुण्ये पुण्यप्रत्ययस्तथैवानर्थे चार्थप्रत्ययो व्याख्यातः।

अर्थात् जिसप्रकार अशुद्ध शरीर को शुद्ध माना जाता है उसीप्रकार पाप कार्य को पुण्य कार्य समझना और अनर्थ को अर्थ समझना भी अविद्या है, ऐसा समझ लेना चाहिए। यहाँ पर महर्षि ने पाप को पुण्य समझने को और अनर्थ को अर्थ समझने को अशुद्ध व शुद्ध में ग्रहण किया है। अनेक बार मनुष्य पाप कर्म को पुण्य कर्म समझ कर करता रहता है। उदाहरण के लिए वर्तमान में मूर्ति पूजा करने वाले पशुओं की बलि देते हैं। वे यह समझते हैं कि ऐसा करके हम ईश्वर को प्रसन्न करेंगे और ईश्वर हमारी मनोकामना पूर्ण करेंगे। ऐसा करने वाले यह नहीं जानते कि किसी का प्राण हरण करने से ईश्वर प्रसन्न नहीं होते बल्कि किसी को प्राण देने से ईश्वर प्रसन्न होते हैं। इसीप्रकार से बहुत से ऐसे कर्म ईश्वर के नाम से करते हैं जो वेदादि शास्त्रों के विरुद्ध होने से पाप कर्म कहलाते हैं। उन पापों को पुण्य मानकर करते रहते हैं। इसकारण पाप को पुण्य मानना अविद्या ही कहलाती है। जिसप्रकार पाप को पुण्य माना जाता है उसीप्रकार अनर्थ को अर्थ माना जाता है। अर्थ का एक अभिप्राय धन से है। मनुष्य अशुद्ध धन को शुद्ध धन मानता है। यद्यपि धन अपने आप में अशुद्ध नहीं होता परन्तु जिस वृत्ति (व्यवहार) से धन प्राप्त किया जाता है। यदि वह वृत्ति यम व नियम के विरुद्ध होती है तो उसे अशुद्ध माना जाता है।

शेष भाग अगले अंक में.....

यज्ञ आदि व्यवहारों के बिना गृहाश्रम में सुख नहीं होता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५१

thearyasamaj.org

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर (प्राथमिक व द्वितीय स्तर)

दिनांक : १४ से २१ जून, २०१५

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों-बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।

२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।

३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।

४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।

५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।

६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।

७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।

१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।

११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है। ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने–ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ

thearyasamaj.org
में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४
email:psabhaa@gmail.com

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

-संयोजक

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उस पर '**मन्त्री परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम - परोपकारिणी सभा, अजमेर

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या-091104000057530 बैंक का नाम-आई.डी.बी.आई. बैंक, पावरहाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।
IFSC - IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या - 10158172715 बैंक का नाम - भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।
IFSC - SBIN0007959

मनुष्यों को उचित है कि परमेश्वर में ही मन बुद्धि को युक्त कर विद्वानों के सङ्ग से विद्या को पा सुखी हो अन्य मनुष्यों को भी इसी प्रकार आनन्दित करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.१४

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

ध्यान प्रशिक्षण योजना

ध्यान का महत्त्व सदा से रहा है। आज के तनाव व प्रतिस्पर्धा के वातावरण में यह अधिक आवश्यक हो गया है। नई पीढ़ी यज्ञादि कर्मकाण्ड की अपेक्षा-ध्यान में अधिक रुचि व आकर्षण रखने लगी है। प्रौढ़ों व वृद्धों की आध्यात्मिक उन्नति की चाह ध्यान के माध्यम से पूरी हो सकती है। समाज सुधार व उन्नति के इच्छुक व इसमें प्रयत्नशील आर्यों को ध्यान प्रशिक्षण का उपाय सार्थक लगेगा। ऐसी इच्छा वाले सज्जन अपने यहाँ किसी भी आर्यसमाज, आर्य संस्था, विद्यालय, महाविद्यालय, गुरुकुल, सार्वजनिक स्थान आदि में 'ध्यान-प्रशिक्षण' करवाना चाहते हों, तो कृपया अपने व कार्यक्रम-स्थान, समय आदि की पूरी सूचना के साथ सम्पर्क करें।

परोपकारिणी सभा द्वारा प्रशिक्षित अनेक ध्यान-प्रशिक्षक इस कार्य में सेवा के लिए तैयार हैं। ये ध्यान-प्रशिक्षक आपके जनपद के निकट भी उपलब्ध हो सकते हैं। आयोजकों को कार्यक्रम हेतु स्थान, बैठक-व्यवस्था, आवश्यक हो तो माईक आदि की व्यवस्था, प्रशिक्षक के निवास, भोजन, आवागमन यात्रा आदि की व्यवस्था करनी होगी।

सम्पर्क-संयोजक, ध्यान प्रशिक्षण योजना, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर, ३०५००१, दूरभाष-०१४५-२४६०१६४, ईमेल-psabhaa@gmail.com

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन निःशुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

।।ओ३म्।।

अलग-अलग स्तरों में योग-साधना शिविर

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि-उद्यान, अजमेर में वर्षों से अब तक योग्य आचार्यों द्वारा योग-साधकों का निर्माण करने के लिए वर्ष में दो बार योग से सम्बन्धित व ध्यान से सम्बन्धित शिविरों का आयोजन किया जाता रहा है और साधकों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रयास किया जाता रहा है। समाज में और अधिक योग्य व आदर्श साधकों की आवश्यकता अनुभव करते हुए इस वर्ष जून मास के शिविर में नवीन पाठ्यक्रम की विधि अपनाकर इस दिशा में एक नया मोड़ दिया गया है।

परोपकारिणी सभा द्वारा ऋषि उद्यान में योग-साधना शिविर (प्राथमिक स्तर) के दो शिविर लगाये जा चुके हैं। यह शिविर ध्यान से सम्बन्धित, ईश्वर-जीव-प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को जानने से सम्बन्धित, योगदर्शन व सांख्यदर्शन के कुछ प्रमुख विषयों के सूत्रों के माध्यम से प्राथमिक स्तर पर योगदर्शन व सांख्यदर्शन को जानने-समझने से सम्बन्धित, आत्मनिरीक्षण में कुछ नये विषयों को सूक्ष्मता से समझने से सम्बन्धित, दिनचर्या को अनुशासित व सात्त्विक बनाने से सम्बन्धित तथा विभिन्न-सैद्धान्तिक व व्यावहारिक विषयों के ज्ञान से सम्बन्धित प्रारम्भिक स्तर के योग के इच्छुक साधकों के लिए लगाया गया। इस योग-साधना शिविर को आगामी वर्षों में चतुर्थ स्तर तक लगाने की योजना बनाई गई है। प्रारम्भिक स्तर से लेकर द्वितीय, तृतीय और चतुर्थ स्तर तक के शिविरों में पूर्व सूचित पाठ्यक्रमित विषयों में अधिक से अधिक सूक्ष्मता, दिनचर्या में और अधिक अनुशासन व सात्त्विकता, आहार-शुद्धि से लेकर मन, आत्मा की शुद्धि पर्यन्त अनुभवात्मक स्तर पर योग-साधकों को ज्ञान करवाया जाएगा। प्रत्येक स्तर के साधकों को उनके सैद्धान्तिक व व्यावहारिक ज्ञान से सम्बन्धित तथा उनके व्यक्तिगत आचरण व अनुशासन को दृष्टि में रखते हुए परीक्षा-पद्धति के माध्यम से प्रथम-श्रेणी व उच्च प्रथम-श्रेणी के प्रमाण-पत्र दिए जायेंगे। इस प्रकार की विधि से योग्य साधकों को समाज में सम्मान मिलेगा तथा वे और अधिक उत्साह से समाज व देश के कल्याण के लिए कार्यरत होंगे, उन्हें देखकर अन्य साधक भी प्रेरित होंगे।

परोपकारिणी सभा व गुरुकुल ऋषि उद्यान के योग्य आचार्यों व संयोजकों द्वारा नवनिर्मित इस योजना के प्राथमिक स्तर में पर्याप्त उपलब्धि हुई है। भविष्य में इस योजना में आप सब के सहयोग की आवश्यकता है।

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अतः सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अतः लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छः माह या अधिक समय भी लग सकता है, अतः कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें। **-संपादक**

thearyasamaj.org

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

परोपकारिणी सभा से आशायें:- यह आनन्ददायक बात है कि देश विदेश के आर्यजन, धर्मप्रेमी, जातिभक्त सज्जन परोपकारिणी सभा से जीवन्त सम्पर्क (लीविंग कान्टेक्ट) रखते हैं। आर्य जनता का लगाव सभा से बढ़ता जा रहा है। आर्य- समाजेतर धर्मप्रेमी, जातिभक्त प्रतिष्ठित विद्वान् व पत्रकार भी निरन्तर सभा के विद्वानों से विचार विमार्श करते रहते हैं। श्रीमान् आचार्य धर्मेन्द्र जी का स्नेह हमें प्राप्त रहता है। वह डॉ. धर्मवीर जी से, इस सेवक से विचार विमर्श करते रहते हैं। श्री शिवकुमार गोयल राष्ट्रीय पत्रकार थे। वह परोपकारी के एक प्रबुद्ध पाठक व शुभचिन्तक प्रशंसक थे।

देश भर से और विदेश से अनेक सज्जन सभा के विद्वानों से चलभाष व पत्रों द्वारा शंका समाधान करते रहते हैं। देश के वयोवृद्ध ज्ञानवृद्ध आर्य पुरुष और आयुर्वेद के मर्मज्ञ डा. वसन्त जी का स्नेह व आर्शीवाद सभा को प्राप्त रहता है।

वह चाहते हैं कि किन्नरों द्वारा युवाओं को किन्नर बनाने की घटनाओं को रोकने के लिए सभा देश को जागरुक करे तथा सर्वोच्च न्यायालय में जनहित याचिका भी दायर करे। हर बुराई से लड़ाई होनी चाहिये। इसके लिए संगठन को दृढ़ बनाना हम सबका कर्त्तव्य है। सुयोग्य निष्काम सेवी, पुरुषार्थी युवक अधिक से अधिक सभा से जुड़ रहे हैं। अभी बहुत कुछ करने की आवश्यकता है । सभा के विद्वानों की हर कार्यक्रम में मांग बढ़ती जा रही है। समय देने वाले विद्वान् और आगे आयें।

एक निवेदन:- कुछ दिन हुए पंजाब से एक सज्जन ने एक ग्रामीण ग्रन्थी की शैली में ठेठ पंजाबी में सिख इतिहास की एक महत्त्वपूर्ण घटना पर एक प्रश्न का उत्तर पाने के लिए फोन पर कहा- क्यों जी आप तड़प झड़प वाले बोल रहे हो? मैंने कहा- जी हाँ, आपका शुभ नाम व परिचय क्या है? वह अपना परिचय तो देते नहीं थे। प्रश्न को दोहराते रहे। कुछ ऐसा लगा कि यह जानी पहचानी आवाज है।

मैंने कहा- यह प्रश्न कोई साधारण व्यक्ति नहीं कर सकता। सूझबूझ वाला विद्वान् ही यह गम्भीर प्रश्न पूछ सकता है। अब मैं समझ गया कि श्री स्वामी सम्पूर्णानन्द जी बोल रहे हैं। मैंने संक्षिप्त उत्तर देते हुए कहा-पूरक प्रश्नों का उत्तर चलभाष पर नहीं दिया जा सकता। आप लिखकर अपने प्रश्न भेज दें। हम दोनों हँसते-हँसते लोटपोट हो गये। श्री विजय भूषण जी आदि कई सुयोग्य स्वाध्यायशील युवक बहुत अच्छे प्रश्न करते हैं। मैं उन्हें भी कहा करता हूँ कि प्रश्न लम्बा है तो मिलिये या लिखकर भेजिये। अब सत्येन्द्रसिंह जी परोपकारी को बहुत समय देते हैं। और कई सहयोगी विद्वान् हैं। अजमेर दो चार बार वर्ष में आया करें। समाज सुदृढ़ होगा।

दाईये इस्लाम का प्रकाशन:- जब से मान्य सत्येन्द्रसिंह जी ने 'दाईये इस्लाम' पुस्तक पर लेख लिखा है। देश भर में इसकी चर्चा होने लगी है। मेरे पास भी पत्र आये हैं। डा. वसन्त जी की इच्छा है कि सभा इसे प्रकाशित करे। कुछ वर्ष पूर्व मैंने मूल उर्दू पुस्तक की एक प्रति सभा को भेंट की थी। डा. जार्डेन्स जी को भेंट की गई पुस्तकों में यह भी थी। मेरा मत है कि सारी पुस्तकों को प्रकाशित करने से कोई लाभ नहीं। इसके महत्त्वपूर्ण अंश ही छपवाकर धर्मप्रेमियों को सजग किया जाये। सभा में यह विचार रखा जावेगा। सत्येन्द्र जी के लेख का व्यापक प्रभाव पड़ा है।

डॉ. रामप्रकाश जी का सुझाव:- डॉ. रामप्रकाश जी से चलभाष पर यह पूछा कि आपके चिन्तन व खोज के अनुसार महर्षि दयानन्द जी के पश्चात् आर्य समाज के प्रथम वैदिक विद्वान् कौन थे? आपने सप्रमाण अपनी खोज का निचोड़ बताया, ''पं. गुरुदत्त विद्यार्थी।''

मैंने कहा कि मेरा भी यह मत है कि सागर पार पश्चिमी देशों में जिसके पाण्डित्य की धूम मच गई निश्चय ही वे पं. गुरुदत्त थे। सन् १८९३ में अमेरिका में वितरण के लिए उनके उपनिषदों का एक 'शिकागो संस्करण' पंजाब सभा ने छपवाया था। इसकी एक दुर्लभ प्रति सेवक ने सभा को भेंट कर दी है। इसका इतना प्रभाव पड़ा कि अमेरिका के एक प्रकाशक ने इसे वहाँ से छपवा दिया। इस दृष्टि से पं. गरुदत्त निर्विवाद रूप से ऋषि के पश्चात् प्रथम वेदज्ञ हुए हैं। परन्तु वैसे देखा जाये तो ऋषि जी के पश्चात् पं. आर्यमुनि आर्यसमाज के प्रथम वेदज्ञ हैं । मेरा विचार सुनकर डॉ. रामप्रकाश जी ने तड़प झड़प में उन पर कुछ लिखने को कहा।

पण्डित जी ने राजस्थान में संगानगर (तब छोटा ग्राम था) में संस्कृत की शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा के लिए

thearyasamaj.org

काशी चले गये। वे उदासी सम्प्रदाय से थे। वहीं ऋषि के दर्शन किये। एक शास्त्रार्थ भी सुना। ऋषि के संस्कृत पर असाधारण अधिकार तथा धाराप्रवाह सरल, सुललित संस्कृत बोलने की बहुत प्रशंसा किया करते थे। पं. युधिष्ठिर मीमांसक जी को अजमेर में बताया था कि ऋषि जी को काशी में सुनकर आप आर्य बन गये। आप ऐसे कहिये कि एक ब्रह्म जीव बन गया।

पण्डित जी का पूर्व नाम मणिराम था। आर्य समाज के इतिहास में प्रथम प्रान्तीय संगठन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब थी। इसके प्रथम दो उपदेशक थे पं. लेखराम जी तथा पं. आर्यमुनि जी महाराज। दोनों अद्वितीय विद्वान्, दोनों ही शास्त्रार्थ महारथी और दोनों चरित्र के धनी, तपस्वी, त्यागी और परम पुरुषार्थी थे। पण्डित जी जब सभा में आये थे तो आपका नाम मणिराम ही था। राय ठाकुरदत्त (प्रसिद्ध वैज्ञानिक प्रो. सतीश धवन के दादा) जी ने इन दोनों विभूतियों के तप,त्याग व लगन की एक ग्रन्थ में भूरि-भूरि प्रशंसा की है। सभा के आरम्भिक काल में पेशावर से लेकर दिल्ली तक और सिंध प्रान्त व बलोचिस्तान में चार रामों ने वैदिक धर्मप्रचार की धूम मचा रखी थी।

ये चार राम थे:- पं. लेखराम, पं. मणिराम (पं. आर्यमुनि), लाला मुंशीराम तथा पं. कृपाराम (स्वामी श्री दर्शनानन्द)। हम पहले बता चुके हैं कि पं. आर्यमुनि जी उदासी सम्प्रदाय से आर्यसमाज में आये थे अत: आपको सिख साहित्य का अथाह ज्ञान था। वेद शास्त्र मर्मज्ञ तो थे ही। पुराने पत्रों में यह समाचार मिलता है कि इस काल में सिख ज्ञानियों के मन में यह विचार आया कि जीव ब्रह्म के भेद और सम्बन्ध विषय में किसी दार्शनिक विद्वान् की स्वर्ण मन्दिर में व्याख्यानमाला का आयोजन किया जाये। तब एक मत से सबने पं. आर्यमुनि जी को इसके लिये चुना।

पण्डित जी ने लगातार सात दिन तक जीव व ब्रह्म के स्वरूप, सम्बन्ध व भेद पर स्वर्ण मन्दिर में व्याख्यान दिये। सब आनन्दित हुए। इसके पश्चात् स्वर्ण मन्दिर में किसी संस्कृतज्ञ, वेद शास्त्र मर्मज्ञ की व्याख्यानमाला की कहीं चर्चा नहीं मिलती।

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज सुनाया करते थे कि पं. आर्यमुनि जी अपने व्याख्यानों में पहलवानों के और मल्लयुद्धों के बड़े दृष्टान्त सुनाया करते थे परन्तु थे दुबले पतले। एक बार एक सभा में एक श्रोता पहलवान ने पण्डित जी से कहा, ''आप विद्या की बातें और विद्वानों के दृष्टान्त दिया करें। कुश्तियों की बातें सुनाना आपको शोभा नहीं देता। इसके लिये बल चाहिये।'' इस पर पण्डित जी ने कहा मल्लयुद्ध भी विद्या से ही जीता जा सकता है। इस पर पहलवान ने उन्हें ललकारा अच्छा फिर आओ कुश्ती कर लो। पण्डित जी ने चुनौती स्वीकार कर ली। सबने रोका पर पण्डित जी कपड़े उतारकर कुश्ती करने पर अड़ गये। पहलवान तो नहीं थे। अखाड़ों में कुश्तियाँ बहुत देखा करते थे। सो स्वल्प समय में ही न जाने क्या दांव लगाया कि उस हट्टे-कट्टे पहलवान को चित करके उसकी छाती पर चढ़कर बैठ गये। श्रोताओं ने बज्म (सभा) को रज्म (युद्धस्थल) बनते देखा। लोग यह देखकर दंग रहे गये कि वेद शास्त्र का यह दुबला पतला पण्डित मल्ल विद्या का भी मर्मज्ञ है।

पण्डित जी का जन्म बठिण्डा के समीप रोमाना ग्राम का है। वे एक विश्वकर्मा परिवार में जन्मे थे। गुण सम्पन्न थे। कवि भी थे। हिन्दी व पंजाबी दोनों भाषाओं के ऊँचे कवि थे।

अग्निवेश फिर खुल खेले:- आर्य समाज को 'सन्ध्या हवन एण्ड कम्पनी' की घृणास्पद गाली देकर आर्य समाज में घुसपैठ करके समाज का विध्वंस करने पर तुला अग्निवेश बाबा अमृतसर गया तो सिखों को सत्यार्थप्रकाश के विरुद्ध उकसा आया। राज्य सभा का सोनिया ने टिकट न दिया। उपराष्ट्रपति बनने का जुगाड़ भी न हो सका तो 'बिगबॉस' का कलाकार बनने की सूझी फिर समलैङ्गिकता का झण्डा उठाया और अब उदयपुर जाकर विश्वविद्यालय में नया मोर्चा खोल दिया है कि यज्ञोपवीत और चोटी की आवश्यकता भी नहीं। पत्रों में इस आशय का इनका वक्तव्य पढ़कर हमें कोई आश्चर्य नहीं हुआ। अब इनको सब वेश में काषाय वस्त्र उतरवाकर अपनी बिग बॉस कम्पनी बनाकर कोई चमत्कार दिखाना चाहिये। हमें कालीकट वाले अरुण जी ने बताया कि कालीकट में इन्होंने विशाल जन समूह में हवन करते लोगों संग जो फोटो खिंचवाया- वह फोटो बार-बार उनसे माँगते हैं। इसे छपवा कर भोले धर्मनिष्ठ लोगों को भ्रमित करने का इसे साधन बनाने की सूझी है।

आर्यसमाज से सीखो:- हिन्दू समाज वेद विमुख होने से अनेक कुरीतियों का शिकार है। एक बुराई दूर करो तो चार नई बुराइयाँ इनमें घुस जाती हैं। सत्यासत्य की कसौटी न होने से हिन्दू समाज में वैचारिक अराजकता है। धर्म क्या है और अधर्म क्या है? इसका निर्णय क्या स्वामी

thearyasamaj.org

विवेकानन्द के अंग्रेजी भाषण से होगा? गीता की दुहाई देने लगे तो गीता-गीता की रट आरम्भ हो गई। गीता में श्री कृष्ण के मुख से कहलवाया गया है कि मैं वेदों में सामवेद हूँ। क्या यह नये हिन्दू धर्म रक्षक वेद के दस बीस मन्त्र सुना सकते हैं?

एक शंकराचार्य बोले साईं बाबा हमारे भगवानों की लिस्ट में नहीं तो दूसरा साईं बाबा भड़क उठा कि साईं भगवान है। इस पर श्री भागवत जी भी चुप हैं और तोगड़िया जी भी कुछ कहने से बचते हैं। प्राचीन संस्कृति की दुहाई देने वाले प्राचीनतम सनातन धर्म वेद से दूर रहना चाहते हैं। धर्म रक्षा शोर मचाने से नहीं, धर्म प्रचार से ही होगी। दूसरों को ही दोष देने से बात नहीं बनेगी। अपने समाज के रोगों का इलाज करो। सनातन धर्म के विद्वान् नेता पं. गंगाप्रसाद शास्त्री ने लिखा है कि पादरी नीलकण्ठ शास्त्री काशी प्रयाग आदि तीर्थों पर प्रचार करता रहा कोई हिन्दू उसका सामना न कर पाया। ऋषि दयानन्द मैदान में उतरे तो उसकी बोलती बन्द हो गयी।

कल्याण में एक शंकराचार्य का लेख छपा कि ओ३म् केवल है केवल ही कर देगा। ब्राह्मणेतर सबको ओ३म् के जप करने से डरा दिया। संघ परिवार ने क्या उसका उत्तर दिया? उत्तर देना आर्यसमाज ही जानता है। ये लोग सीखेंगे नहीं । ये अमरनाथ यात्रा के लंगर लगाकर धर्म रक्षा नहीं कर सकते। टी.वी. पर एक मौलवी ने इन्हें कहा, इस्लाम मुहम्मद से नहीं रत आदम व हौवा से आरम्भ होता है। यह आदि सृष्टि से है। विश्व हिन्दू परिषद् का नेता, प्रवक्ता उसका प्रतिवाद न कर सका। कोई आर्यसमाजी वहाँ होता तो दस प्रश्न करके उसे निरुत्तर करा देता। आदम व माई हौवा के पुत्र पुत्रियों की शादी किस से हुई? उनके सास ससुर कौन थे? एक जोड़े से कुछ सहस्र वर्ष में इतनी जनसंख्या कैसे हो गई?

एक मियाँ ने कहा जन्म से हर कोई मुसलमान ही पैदा होता है। किसने उसका उत्तर दिया?

शंकराचार्य की गद्दी पर आज भी ब्राह्मण ही बैठ सकता है। काशी, नासिक, बैंगलूर आदि नगरों में विश्व हिन्दू परिषद् एक तो वेदपाठशाला दिखा दे जहाँ सबको वेद के पठन पाठन का अधिकार हो। काशी में कल्याणी देवी नाम के एक आर्य कन्या को मालवीय जी के जीवन काल में धर्म विज्ञान की एम.ए. कक्षा में वेद पढ़ने से जब रोका गया तो आर्य समाज को आन्दोलन करना पड़ा । यह कलङ्क का टीका कब तक रहेगा?

पं. गणपति शर्मा जी का वह शास्त्रार्थ:- एक स्वाध्यायशील प्रतिष्ठित भाई ने पं. गणपति शर्मा जी के पादरी जानसन से शास्त्रार्थ के बारे में कई प्रश्न पूछ लिये। संक्षेप से सब पाठक नोट कर लें । यह शास्त्रार्थ १२ सितम्बर सन् १९०६ में हजूरी बाग श्रीनगर में महाराजा प्रतापसिंह के सामने हुआ। यह गप्प है, गढ़न्त है कि तब राज्य में आर्यसमाज पर प्रतिबन्ध था। पोपमण्डल अवश्य वेद प्रचार में बाधक था। तब श्रीनगर आर्यसमाज के मन्त्री महाशय गुरबख्श राय थे। हदीसें गढ़नेवालों ने सारा इतिहास प्रदूषित करने की ठान रखी है। मन्त्री गुरबख्श राय जी का छपवाया समाचार इस समय मेरे सामने है। और क्या प्रमाण दूँ?

बड़ों ने सिखाया:- मेरे प्रेमी पाठक जानते हैं कि मैं यदा-कदा अपने लेखों व पुस्तकों में उन अनेक आर्य महापुरुषों व विद्वानों के प्रति कृतज्ञता व आभार प्रकट करता रहता हूँ जिन्होंने मुझे कुछ सिखाया, बनाया अथवा जिनसे मैंने कुछ सीखा। मैंने प्रामाणिक लेखन के लिये नई पीढ़ी के मार्गदर्शन के लिए 'दयानन्द संदेश' में पं. लेखराम जी तथा पूजनीय स्वामी वेदानन्द जी की एक-एक घटना दी थी। कुछ युवकों को ये दोनों प्रसंग अत्यन्त प्रेरक लगे। तब कुछ ऐसे और प्रसंग देने की मांग आई।

आज लिखने के लिये कई विषय व कई प्रश्न दिये गये हैं परन्तु दो मित्रों के चलभाष पाकर प्रामाणिक लेखन के लिए अपने दो संस्मरण देना उपयुक्त व आवश्यक जाना। श्री वीरेन्द्र ने सन् १९५७ में अपनी जेल यात्रा पर एक लेखमाला में लिखा था कि उनके साथ वहीं उनके पिता श्री महाशय कृष्ण जी व आनन्द स्वामी जी को बन्दी बनाया गया। महाशय जी की आयु अधिक थी, शरीर निर्बल व कुछ रोगी भी था। उन्हें रात्रि समय शरीर में बहुत दर्द होने से नींद नहीं आती थी । एक रात्रि शरीर दुखने से वे हाय-हाय कर रहे थे। वीरेन्द्र जी को गहरी नींद में पिता के कष्ट का पता ही न चला। आनन्द स्वामी जी वैसे ही दो-तीन बजे के बीच उठने के अभ्यासी थे। आप उठे और महाशय जी के शरीर को दबाने लगे।

महाशय जी समझे के वीरेन्द्र मेरा शरीर दबा रहा है फिर पता चला कि श्री आनन्द स्वामी जी उनकी टांगें बाहें दबा रहे हैं। आपने महात्मा जी को रोका। आप संन्यासी हैं, ऐसा मत करें। श्री स्वामी ने कहा, आप मुझ से बड़े हैं। हमारे नेता हैं। सेवा करने का मेरा अधिकार मत छीनिये।

इस घटना की जाँच व पुष्टि के लिए मैं आनन्द स्वामी

thearyasamaj.org

जी के पास गया। आपने भी वही कुछ बताया और कहा कि महाशय जी का ध्यान बदलने के लिये मैं उन्हें हँसाता रहता, चुटकले सुनाता इत्यादि। मेरे ऐसा करने से इतिहास की पुष्टि हो गई। प्रामाणिकता को बल मिला। प्रसंग से पाठकों को अधिक ऊर्जा मिली।

स्वामी सत्यप्रकाश जी के संन्यास के पश्चात् श्री आनन्द स्वामी पहली बार तब प्रयाग गये तो आर्यों से कहा, ''मैं स्वामी सत्यप्रकाश जी के दर्शन करना चाहता हूँ। उनसे मिलवा दें।''

उन्होंने कहा, ''वे आपसे मिलने आयेंगे ही।''

श्री आनन्द स्वामी जी ने कहा, ''नहीं मैं वहीं जाऊँगा।'' उनका आग्रह देखकर समाज वाले उन्हें कटरा समाज में ले गये। महात्मा जी को देखते ही स्वामी सत्यप्रकाश उनके चरण स्पर्श करने उठे। उधर से आनन्द स्वामी उनके चरण स्पर्श करने को बढ़े। देखने वालों को इस चरण स्पर्श प्रतियोगिता का बड़ा आनन्द आया। वे दंग भी हुये।

इस घटना की जानकारी पाकर मैं महात्मा जी से मिला और कहा, ''प्रयाग में स्वामी सत्यप्रकाश जी के चरण स्पर्श की अपनी घटना, आप सुनायें।'' आपने कहा, ''हमारे महान् नेता और विद्वान् पं. गंगाप्रसाद उपाध्याय जी के सपूत ने धर्मप्रचार के लिए संन्यास लिया है। मैं उनके दर्शन करने को उत्सुक था। सारी घटना सुना दी। फिर स्वामी सत्यप्रकाश जी के पास गया उनसे भी वही निवेदन किया। आपने भी घटना सुनाते हुए कहा, आनन्द स्वामी बड़े हैं, उनके शरीर में फुर्ति है। वे जीत गये। मैं हार गया।''

पता चला कि उस समय श्री गौरी शंकर जी श्रीवास्तव वहीं थे। मैं उनके पास गया। दर्शक की प्रतिक्रिया जानी। इसी प्रकार इतिहास की सामग्री की खोज में मैंने सदा इसी ढंग से जाँच पड़ताल के लिए भाग दौड़ की। समय दिया। धन फूँका।

उतावलापना इतिहास रौंद देता है:- किसी योग्य युवक ने अब्दुलगफूर पाजी जो धर्मपाल बनकर छलिया निकला उसके बारे में चलभाष पर कई प्रश्न पूछे। मैंने उन्हें कुछ बताया और कहा, उस पर कुछ मत लिखें। मेरे से मिलकर बात करें। आपकी जानकारी भ्रामक है। अधकचरे लेखकों ने इतिहास को पहले ही प्रदूषित कर रखा है। एक ने उसे महाशय धर्मपाल लिखा है। वह कभी महाशय धर्मपाल के रूप में नहीं जाना गया। सत्यार्थप्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने का उसने भी छेड़ा था। इतिहास रौंदने वालों ने यह तो कभी नहीं बताया।

लोखण्डे जी का चलभाष:- माननीय लोखण्डे जी ने इस्लाम छोड़कर आर्य समाज में प्रविष्ट होने वालों पर ग्रन्थ लिखने का मन बनाया। मैंने उन्हें ऐसा करने से रोका और कहा, ''आप मौलाना हैदर शरीफ पर कुछ खोज करें।''

उन्होंने पुन: सूफी ज्ञानेन्द्र व पं. देवप्रकाश जी पर कुछ जानकारी चाही। तब मुझे विवश होकर यह बताना पड़ा कि श्री लाजपतराय अग्रवाल से मिलें। वह बतायेंगे कि सन् १९७७ में इसी व्यक्ति ने हनुमानगढ़ समाज के उत्सव में घुसकर समय लेकर आर्यसमाज की भरपेट निन्दा की। किसी अन्य संगठन का गुणगान कर वातावरण बिगाड़ा। श्री लाजपतराय ने मुझे उसका उत्तर देने के लिए अनुरोध किया। मैंने अपने व्याख्यान में सूफी के विषैले कथन का निराकरण कर दिया। तब उसके प्रेमी संगठन के लोग मुझे पीटने को........ मुझे कहा गया, आप भीतर कमरे मे चलिये। ये लोग आपको मारेंगे।

मैंने कहा, ''जो कैरों के मारे न मरा वह इनके मारने से भी नहीं मरेगा। आये जिसका जी चाहे।''

इसी व्यक्ति ने गंगानगर समाज में आर्यसमाज की निन्दा में कमी न छोड़ी। तब ला. खरायतीराम जी ने व मैंने उत्तर दिया।

कोटा से भी किसी ने परोपकारी में इसकी प्रशंसा में ....मैं चुप रहा। इसी सूफी ने कभी एक अत्यन्त निराधार चटपटी कहानी स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के बारे गढ़कर भ्रामक प्रचार किया। स्वामी जी महाराज का तो यह कुछ न बिगाड़ सका, यह आप ही आर्यसमाज में किनारे लग गया। व्यसनी भी था। इस पर लिखने के लिए उत्सुक जन वैदिक धर्म पर इसके दस बीस लेख तो कहीं खोजकर लायें।

मैं किसी को निरुत्साहित करने का पाप तो नहीं कर सकता, परन्तु दृढ़ता पूर्वक कहूँगा कि जो लिखो वह प्रामाणिक, प्रेरणाप्रद, खोजपूर्ण व मौलिक हो। विरोधियों के उत्तर तो देते नहीं। जिससे न्यूज बने, कुछ भाई ऐसे विषय ही चुनते हैं। पूज्य पं. देवप्रकाश जी के शिष्यों की खोज करके कुछ लिखो।

वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

thearyasamaj.org

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग एक वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम-**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**10158172715**
IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम-**आई.डी.बी.आइ**, पावर हाऊस के सामने,
जयपुर रोड़, अजमेर।
बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या-**091104000057530**
IFSC-IBKL0000091
email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन-जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के लिए 'आस्था-भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग-यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था-भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था-भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद-प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था-भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था-भजन' (चैनल) डिश-टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा-स्काई, वीडियोकोन, बिग-टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार-बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक-धर्म के प्रचार-प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

thearyasamaj.org

दक्षिण भारत में आर्यसमाज का योगदान

- डॉ. ब्रह्ममुनि

देश के भौगोलिक अध्ययन के लिए, इसे सुविधा की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जाता है- पहला उत्तर और दूसरा दक्षिणी भाग। यद्यपि यह विभाजन वैज्ञानिक नहीं है, तथापि सामान्य रूप से उत्तरी भाग को 'उत्तर भारत' और दक्षिणी भाग को 'दक्षिण भारत' के नाम से अभिहित किया जाता है। उपर्युक्त विभाजन के अतिरिक्त पाश्चात्य विद्वानों ने एक अलग प्रकार की भ्रामक संकल्पना की है कि आर्य बाहर से इस देश में आए और वे उत्तरी भाग में निवास करने लगे तथा यहाँ के पूर्व निवासियों को उन्होंने दक्षिण में भगाया, अत: उत्तर के निवासी **'आर्य'** कहलाए और दक्षिण के निवासी **'द्रविड'** कहलाए। पाठ्यक्रमों में इसी अवधारणा को पढ़ाया जाने के कारण सुशिक्षित एवं बुद्धिजीवी वर्ग में यही भ्रामक अवधारणा प्रबल है। किन्तु यह अवधारणा तर्क व प्रमाण सम्मत नहीं है, क्योंकि संस्कृति, भाषा और दर्शन इन तीनों का उद्‌गम स्थान एक ही भारत है। दक्षिण की सभी भाषाओं में संस्कृत का शब्द-भण्डार प्रचुर मात्रा में तत्सम रूप में पाया जाता है तथा वेद का पठन-पाठन दक्षिण भारत में ही पारम्परिक रूप से विद्यमान हैं। पूरे भारत में जीवन-पद्धति वेद सम्मत थी, किन्तु धर्माचार्यों ने स्वार्थ, अज्ञान, अन्धविश्वास, सदोष मतमतान्तर के कारण जो वेद विरुद्ध परम्परा प्रारम्भ की उससे हमारी सामाजिक, पारिवारिक और राष्ट्रीय स्थिति अत्यन्त खोखली हो गई। ऐसी आन्तरिक कलह की स्थिति को देखकर उत्तर से अनेक विदेशी आक्रान्ताओं ने समृद्ध भारत पर आक्रमण किए तथा यहाँ की सम्पत्ति, संस्कृति, शिक्षा-पद्धति और जीवन-पद्धति पर तीव्र कुठाराघात किया।

आभ्यन्तर तथा बाह्य दोनों दृष्टियों से कालबाह्य रुढ़ियों तथा सिद्धान्तों से घुन लगा हुआ समाज पूरी तरह खोखला हो गया था। ऐसी दुरावस्था में गुजरात प्रान्त के टंकारा में सन् १८२४ में महर्षि दयानन्द सरस्वती का जन्म हुआ। उनके गुरु विरजानन्द जी ने मानव मात्र में व्याप्त दु:ख, अशान्ति तथा रोग के मूलभूत कारण- अज्ञान, अविवेक तथा अन्धविश्वास को बताकर सबके कल्याणार्थ वेद के शाश्वत ज्ञान को मानव-मात्र के कल्याण का मार्ग बताया तथा महर्षि दयानन्द ने इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन न्यौछावर किया। इसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए उन्होंने वेदों की अपौरुषेयता तथा आर्ष ग्रन्थों की प्रामाणिकता बताकर तथा अनेक ग्रन्थों का प्रणयन कर मानव-मात्र को जीवन के श्रेयमार्ग का पथिक बनाने के लिए सन् १८७५ में मुम्बई में 'आर्यसमाज' की स्थापना की।

यद्यपि आर्यसमाज की स्थापना मुम्बई में हुई तथापि उसका प्रचार-प्रसार उत्तर भारत में- विशेष रूप से पंजाब में हुआ। लाहौर में उपदेशक महाविद्यालय की स्थापना की गई। दक्षिण भारत के अनेक विद्यार्थी वहाँ पढ़कर उपदेशक बनकर आए और दक्षिण भारत में आर्य समाज के वैचारिक सिद्धान्तों से उपदेशों के द्वारा जनजागृति का कार्य किया।

दक्षिण भारत का योगदान:- दक्षिण भारत में उस समय निजामशाही का राज्य था। मराठवाड़ा के वर्तमान आठ जिले, कर्नाटक के ५ जिले तथा आन्ध्र के जिलों को जोड़कर हैदराबाद राज्य की सीमा थी। इसके अतिरिक्त दक्षिण भारत में अन्य शासकों के अपने-अपने राज्य थे। उस समय दक्षिण भारत में अनेक मत-मतान्तर थे तथा जैन, बौद्ध, पारसी, इस्लाम, ईसाई, विविध पन्थ, सम्प्रदाय और धर्म प्रचलित थे। ऐसी विषम परिस्थिति में आर्यसमाज को अपना कार्य दक्षिण भारत में करना पड़ा।

व्यक्ति निर्माण:- दक्षिण भारत के बहुत लोगों ने आर्यसमाज के विचारों से प्रभावित होकर विद्वान् बनने के लिए उत्तर भारत की वैदिक संस्थाओं में अध्ययन किया, आर्यसमाज का आजीवन प्रचार किया और साथ ही नए व्यक्तियों को आर्यसमाजी बनने की प्रेरणा दी। इनमें कुछ प्रमुख नाम निम्नलिखित हैं- पं. नरेन्द्र, पं. श्यामलाल, बंसीलाल, शेषराव वाघमारे, उत्तममुनि, विनायकराव विद्यालंकार, न्यायमूर्ति कोरटकर, चन्द्रशेखर वाजपेयी। इन लोगों ने अनेक क्षेत्रों में आर्यसमाज के अनेक पहलुओं को लेकर काम किया, जिसके परिणामस्वरूप आज दक्षिण भारत में हजारों आर्यसमाजी अपने विभिन्न क्षेत्रों में रहते हुए आर्यसमाज का प्रचार कर रहे हैं।

संस्थाएँ:- आर्यसमाज के सैद्धान्तिक विचारों के प्रचार-प्रसार, सेवा, सुरक्षा एवं व्यक्ति निर्माण के लिए आर्यसमाज और संगठन की स्थापना की गई। मुम्बई के बाद बीड़ (महाराष्ट्र) जिले के निवासी तिवारी नामक व्यक्ति ने महर्षि दयानन्द के भाषण सुनकर दूसरा आर्यसमाज सन् १८८० में धारूर नामक ग्राम में स्थापित किया। इसके

thearyasamaj.org

बाद सुल्तान बाजार (हैदराबाद) में आर्यसमाज की स्थापना की गई जो दक्षिण भारत के आर्यसमाज का बहुत बड़ा केन्द्र था। जिसके परिणामस्वरूप प्रत्येक प्रदेश ने अपनी-अपनी प्रादेशिक सभाओं की स्थापना की जैसे- मुम्बई आर्य प्रतिनिधि सभा, मध्य दक्षिण आर्य प्रतिनिधि सभा तथा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा से संलग्न।

दक्षिण भारत के आर्यसमाजी विद्वान्:- दक्षिण भारत में आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के कारण तथा उत्तर भारत की संस्थाओं में पढ़कर अनेक विद्वान् तैयार हुए और उन्होंने अपने-अपने प्रान्तों में जाकर वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार-प्रसार किया। इनमें कुछ नाम निम्न प्रकार हैं- पं. नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ (उस्मानाबाद), बंशीलाल व्यास (हैदराबाद), शामलाल (उदगीर), डी.आर. दास (लातूर), गोपालदेव शास्त्री (बसदकल्याण) प्रेमचन्द्र प्रेम (भदनुर), पं. मदनमोहन विद्यासागर, गोपदेव शास्त्री, पं. वामनराय येवणूरधर इत्यादि। यह सूची प्रदीर्घ है, स्थानाभाव के कारण कुछ ही विद्वानों के नाम गिनाए हैं।

साहित्य-निर्माण:- जनमानस तक वैदिक सिद्धान्तों को पहुँचाने के लिए, वैचारिक क्रान्ति के लिए साहित्य और आर्यसमाज के सिद्धान्तों को प्रादेशिक भाषाओं में भी निर्माण किया। इन विचारों से समाज में जागृति हुई। प्रमुख लेखकों में पं. नरेन्द्र, विनायकराव विद्यालंकार, खंडेराव कुलकर्णी, उत्तममुनि इत्यादि उल्लेखनीय हैं। इसके साथ दक्षिण भारत की सभी भाषाओं में महर्षि दयानन्द की पुस्तकों का अनुवाद भी किया गया।

पत्रिकाएँ:- हैदराबाद में आर्यसमाज की स्थापना के बाद 'मुंशी रे दकन' साप्ताहिक निकाला गया जो वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार करता था। उर्दू साप्ताहिक 'नई जिन्दगी' जे.एन. शर्मन के सम्पादकत्व में निकलने लगा। शोलापुर से 'वैदिक सन्देश' तथा 'सुदर्शन' भी साप्ताहिक प्रकाशित होने लगे। चन्दूलाल, पं. नरेन्द्र तथा सोहनलाल ठाकुर के सम्पादकत्व में 'वैदिक आदर्श' साप्ताहिक प्रारम्भ हुआ, जो उर्दू में प्रकाशित होकर मुसलमानों के अत्याचारों का जवाब प्रखरता से देता था। बाद में यही साप्ताहिक 'सोलापुर' से 'वैदिक सन्देश' के नाम से निकलने लगा जो पुन: 'आर्यभानु' के नाम से हैदराबाद से शुरू हुआ। लक्ष्मणराव पाठक ने 'निजाम विजय' पत्रिका शुरू की। अनेक पत्रिकाएँ नाम बदलकर निकलने लगीं।

व्याख्यान माला:- ग्रामीण भाग के जन साधारण लोगों के लिए जो अनपढ़, अशिक्षित और अज्ञानी थे उनकी वैचारिक जागृति के लिए उनके गाँवों में जाकर उनके समय के अनुसार, उन्हीं की भाषा में विद्वान् पण्डित तथा भजनोपदेशकों ने व्याख्यानों से जनजागरण का कार्य किया। प्रतिवर्ष श्रावणी सप्ताह तथा भारतीय काल गणनानुसार नववर्ष के प्रारम्भ में वार्षिकोत्सव का आयोजन किया जाता था जिसमें विविध सम्मेलन आयोजित किये जाते थे जैसे- धर्मरक्षा, राष्ट्ररक्षा, महिला सम्मेलन, वेद-सम्मेलन, संस्कृत सम्मेलन, संस्कार शिविर आदि। इसके साथ ही सामयिक विषयों पर भी व्याख्यान आयोजित किए जाते थे। जिसमें अन्धश्रद्धा निर्मूलन, व्यसनमुक्ति, स्वास्थ्य रक्षा इत्यादि द्वारा जन-जागरण का महत्त्वपूर्ण कार्य आर्यसमाज के इन उपक्रमों द्वारा किया जाता था।

षोडश संस्कार:- महर्षि दयानन्द ने वेदाधारित १६ संस्कार का महत्त्व बताकर मनुष्य निर्माण कार्य के लिए प्रतिपादन किया। साथ ही इसकी वैज्ञानिकता भी प्रतिपादन की। सोलह संस्कारों की प्रासंगिकता प्रतिपादित की तथा समाज के जिस वर्ग का उपनयन संस्कार नहीं होता था उन सबका आर्यसमाज ने उपनयन संस्कार कराया तथा समाज के वातावरण का निर्माण किया। इसके साथ-साथ कन्याओं तथ महिलाओं का भी उपनयन संस्कार करा कर नारी को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाया। जिसके फलस्वरूप आज महिलाएँ पौरोहित्य का कार्य सुचारू रूप से सम्पन्न करा रही हैं। अन्त्येष्टि संस्कार का भी वैदिक पद्धति से प्रचलन किया।

शिविरों का आयोजन:- ग्रामीण तथा शहरी भागों में वैचारिक क्रान्ति, सिद्धान्तों की वैज्ञानिकता, मानव को संस्कारित करने के लिए विद्वान् और सेवाभावी लोगों ने शिविरों का आयोजन किया। संस्कार शिविरों द्वारा स्वामी श्रद्धानन्द जी (पूर्वाश्रमी हरिश्चन्द्र गुरु जी) ने अनेक तरुण विद्यार्थी तथा विद्यार्थिनियों को सन्मार्ग बताकर सुसंस्कारित, जागरूक तथा कर्त्तव्य परायण नागरिक बनाया। इसी प्रकार आर्यवीर दल तथा स्वास्थ्य रक्षा शिविरों द्वारा नवयुवकों में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता उत्पन्न की तथा व्यसनाधीनता से परामुख किया। इसके साथ-साथ कन्याओं की उन्नति के लिए कन्या संस्कार शिविर, समाज के प्रत्येक वर्ग के व्यक्ति को पौरोहित्य कार्य की वैदिक निधि का ज्ञान कराने के लिए पुरोहित प्रशिक्षण शिविर, बाल्यावस्था के कोमल मन पर राष्ट्रीय भावना जगाने के लिए तथा संस्कारों के बीजवपन के लिए बाल संस्कार शिविर, मन की स्थिरता के लिए ध्यान योग शिविर, आसन प्राणायाम शिविर तथा योग शिविर, रोग चिकित्सा के लिए प्राचीन काल की

thearyasamaj.org

ऋषियों द्वारा अनुमोदित आयुर्वेद चिकित्सा शिविर तथा गोमाता की रक्षा के लिए गो कृषि शिविर आयोजित किए जाते हैं, जिससे समाज के उपर्युक्त सभी क्षेत्रों तथा अंगों में जागृति आने से व्यक्ति, परिवार, समाज सभी सुखी और स्वस्थ बन सके।

सम्मेलनों का आयोजनः- समाज के अन्तिम छोर के व्यक्ति के निर्माण के साथ-साथ, पूरे समाज को जगाने के लिए, वैचारिक क्रान्ति, सामुदायिक परिवर्तन, आत्मविश्वास, सुरक्षा, सामाजिक सुरक्षा बल, बाह्य परम्पराओं से विद्रोह के लिए अनेक शीर्षस्थ विद्वानों के भाषणों से समाज परिवर्तन के लिए विविध स्तरों पर अनेक सम्मेलन आयोजत किए गए। जिनके परिणामस्वरूप जनसामान्य में सामाजिक जागृति हुई। इन सम्मेलनों से विविध प्रदेशों के आर्यसमाजी व्यक्तियों का जहाँ पारस्परिक परिचय हुआ वहीं भाषाई आदान-प्रदान भी हुआ जिसने आर्यसमाज के उच्च कोटि के विद्वानों और लेखकों के साहित्य के अनुवाद कार्य के लिए सेतु का कार्य किया। ये सम्मेलन प्रान्तीय, राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित किए जाते हैं। जैसे मॉरीशस के अन्तर्राष्ट्रीय आर्य सम्मेलन में श्री हरिश्चन्द्र जी धर्माधिकारी इत्यादि ने सम्मिलित होकर वहाँ की सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक स्थितियों का अध्ययन किय। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अर्ध शताब्दि निर्वाण सम्मेलन (सन् १९३३) तथा महर्षि दयानन्द जी के शताब्दि निर्वाण सम्मेलन (सन् १९८३-८४) में दक्षिण भारत के हजारों कार्यकर्त्ता सम्मिलित हुए और वहाँ से ऊर्जा प्राप्त कर अपने-अपने शहरों, गाँवों तथा महानगरों में अधिक सक्रियता से भाग लिया। इसी प्रकार सामाजिक सुधारों के लिए महिला सम्मेलन, वानप्रस्थियों के आत्म कल्याण के लिए वानप्रस्थी सम्मेलन, सैद्धान्तिक विषयों के विचार-मन्थन के लिए विद्वत्-सम्मेलन, आयोजित किए जिसमें डॉ. ब्रह्ममुनि,डॉ. कुशलदेव शास्त्री, डॉ. देवदत्त तुंगर आदि ने सक्रिय भाग लिया। वसैये बन्धु ने औरंगाबाद में मराठवाड़ा स्तर का सम्मेलन आयोजित किया जिसमें विद्वानों तथा स्वन्त्रता-सैनानियों को सम्मानित किया गया।

निजाम के विरोध में सत्याग्रहः- अन्याय के विरुद्ध, अत्याचार के विरुद्ध, संस्कृति एवं मानव-धर्म को मिटाने के विरुद्ध, असुरक्षा के विरुद्ध तथा राष्ट्रीयता की भावना जाग्रत करने के लिए, व्यक्ति, परिवार, समाज में जागृति लाकर शासन के विरुद्ध निजाम के विरोध में न्याय, धर्म, संस्कृति और नागरिक अधिकारों की प्राप्ति के लिए सत्याग्रह प्रारम्भ किया। निजाम ने आर्यसमाज के विद्वानों के प्रवेश बन्दी, यज्ञ बन्दी, समाचार-पत्रों पर बन्धन तथा धार्मिक उत्सवों तथा विद्वानों के भाषणों पर बन्दी लागू कर दी, जिससे सार्वदेशिक सभा दिल्ली के नेतृत्व में उत्तर भारत से विभिन्न नेताओं के नेतृत्व में सत्याग्रही लोगों के जत्थे पर जत्थे आए। उदगीर के दंगे से मराठवाड़ा का वातावरण भी पूरी तरह अशान्त हो गया। श्यामलाल, रामचन्द्रराव कामठे, गंगाराम डोंगरे तथा अमृराव जी को पकड़ा गया और जिन्हें कड़ी से कड़ी धाराओं में सजा दी गई उसमें श्यामलाल जी का बलिदान हुआ। गुलबर्गा में सत्याग्रहियों को जेल में डाला गया जिसमें दक्षिण केसरी पं. नरेन्द्र पर अमानवीय अत्याचार किए गए, जिसमें उनकी एक टांग टूट गई। उन्हें कारावास में अनेक यातनाएँ दी गईं और खाने के लिए सीमेंट की रोटी दी गई। कठोर से कठोर यातनाओं को देने के बाद भी इन देशप्रेमी आर्य सत्याग्रहियों ने माफी नहीं माँगी, जिससे अन्य लोगों में भी देश-प्रेम की भावना जगी और जगह-जगह पर क्रूर निजाम के विरोध में आन्दोलन होने लगे जिसमें हजारों सत्याग्रहियों को कठोर कारावास हुआ तथा अनेक सत्याग्रही हुतात्मा हुए। प्रथम जत्थे के नेता महात्मा नारायण स्वामी थे जो गुरुकुल काँगड़ी के ४० विद्यार्थियों को लेकर शोलापुर से हैदराबाद गए। इसके बाद आठ आर्य नेताओं के नेतृत्व में जिनमें अन्तिम-विनायकराव विद्यालंकार थे, सत्याग्रह किया गया। जिसके सामने निजाम को झुकना पड़ा और उनकी माँगें मान ली गईं। इस सत्याग्रह में मित्रप्रिय मिसाल (नसगीर), खण्डेराव दत्तात्रय (शोलापुर) गोविन्दराव (नसंगा), पाण्डुरंग (उस्मानाबाद), सदाशिवराव पाठक (शोलापुर) माधवराव पाठक (लातूर) आदि का जेल में बलिदान हुआ तथा महाराष्ट्र के लगभग ४०० सत्याग्रही लोगों को कठोर कारावास की यातनाएँ भोगनी पड़ी। जिनमें शेषराव वाघमारे, गुरु लिंबाड़ी चव्हाण, दिगम्बरराव धर्माधिकारी, आराम परांडेकर, भीमराव कुलकर्णी (डॉ. धर्मवीर, कार्यकारी प्रधान, परोकारिणी सभा के पिता) रघुनाथ टेके, दिगम्बर शिव नगीटकर, तुलसीराम कांबले, दिगम्बर पटवारी, शंकरराव कापसे इत्यादि सत्याग्रहियों के नाम प्रमुख हैं। यह सूची अत्यन्त प्रदीर्घ है लेकिन स्थानाभाव के कारण कुछ व्यक्तियों के ही नाम दिए गए हैं। इन सभी स्वतन्त्रता सेनानियों के त्याग, बलिदान, राष्ट्रप्रेम, सिद्धान्तप्रियता इत्यादि मूल्यों के कारण ही भारतवर्ष की आजादी के बाद लगभग १३ महीने बाद हैदराबाद राज्य स्वतन्त्र हुआ।

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

पुस्तक-समीक्षा

सत्यार्थप्रकाश का आजतक का सर्वाधिक श्रमयुक्त शोध संस्करण

पुस्तक का नाम - सतत साधना (ज्ञान-समुद्र आचार्य उदयवीर जी की जीवनी)

लेखक - प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

प्रकाशक - महेद्रसिंह आर्य, वेद प्रचारिणी सभा चामधेड़ा, डाकघर बेरी, जिला महेन्द्रगढ़-१२३०२९ (हरियाणा)

पृष्ठ संख्या - ३०० **मूल्य** - २५०/-

जो जाति अपने महापुरुषों, विद्वानों, बलिदानियों एवं तपस्वी वाग्मियों का स्मरण करती रहती है और उनसे प्रेरणा लेती है उसका भविष्य उज्ज्वल होने की प्रबल सम्भावना रहती है। समीक्षाधीन पुस्तक वैदिक वाङ्मय के प्रकाण्ड पण्डित, आर्यजगत् के गौरव, महाविद्वान् दर्शनाचार्य श्री पं. उदयवीर जी शास्त्री का जीवन चरित है। इस ग्रन्थ के ऊहावान् शिल्पी, प्रसिद्ध इतिहासज्ञ, साहित्यकार, वक्ता और लेखक प्रो. राजेन्द्र जी जिज्ञासु, अबोहर हैं जिनका जीवनी साहित्य के सृजन में, विश्व में कीर्तिमान है। विश्व की कई संस्थाओं द्वारा प्रकाशित हू इज हू में जिनका नाम उनकी कुछ विशिष्ट कृतियों के नाम के साथ प्रकाशित होता है आर्यजगत् में जिज्ञासु जी ऐसे अकेले लेखक हैं।

सतत-साधना ग्रन्थ में ८ पृष्ठीय प्राक्कथन के अतिरिक्त १३ अध्याय हैं एवं अन्त में कुछ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सामग्री परिशिष्ट के रूप में दी गयी है। प्राक्कथन में विद्वान् लेखक ने विनम्रतापूर्वक स्पष्ट कर दिया है कि महर्षि के अन्यतम भक्त और वैदिक मिशन के दीवाने "आर्य जाति के एक मूक, निष्काम तथा कर्मठ सेवक प्रिय अनिल आर्य ने" इस कार्य के लिए उन पर दबाव बनाये रखा। अनिल जी के ही एक स्वजन (जिनके साथ उनका सहोदर जैसा स्नेह है) ऋषि भक्त, स्वदेश भक्त श्री महेन्द्रसिंह जी आर्य ने इस ग्रन्थ के प्रकाशन की सारी व्यवस्था कर दी। तभी उत्तम कागज पर स्थूल अक्षरों की छपाई में सुन्दर साजसज्जा वाला यह पठनीय और माननीय ग्रन्थ पाठकों के हाथों में पहुँचा है।

इस ग्रन्थ में विद्वान् लेखक ने इस तथ्य को उजागर किया है कि आचार्य जी प्रसिद्ध क्रान्तिकारी सरदार भगतसिंह, भगवतीचरण बोहरा, दुर्गा भाभी आदि के संरक्षक थे। ग्रन्थ के आरम्भ में ही नैशनल कॉलेज लाहौर के छात्रों द्वारा खेले गए हिन्दी नाटक 'भारत दुर्दशा' के एक दृश्य का एक **दुर्लभ ऐतिहासिक ग्रुप फोटो दिया है। इतिहास के हस्ताक्षर** के तौर पर 'प्रेम' नाम की पुस्तक का वह पृष्ठ भी स्कैन करके दिया है जिसमें भगतसिंह ने अपने हस्ताक्षर करते हुए एक शिष्य के रूप में अपने आचार्य प्रवर को यह पुस्तक भेंट की है- "Presented to Pt. Udaya Veer Shastri by his obedint pupil- Bhagt Singh"

आचार्य उदयवीर जी का वंश वृक्ष एवं उनके परिवार के चित्र भी ग्रन्थ की शोभा बढ़ा रहे हैं। आचार्य जी के पिता श्री ठाकुर पूर्णसिंह जी का चित्र मेरठ निवासी श्री यशपालसिंह आर्य कई बार उनके ग्राम बनैल जाकर प्राप्त कर सके। महर्षि दयानन्द सरस्वती, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, स्वामी वेदानन्द (दयानन्द तीर्थ) स्वामी विज्ञानानन्द आदि के रंगीन चित्र इस ग्रन्थ की ऐतिहासिक महत्ता दर्शा रहे हैं। ग्रन्थ के प्रथम अध्याय का नाम 'वेदोदम' रखा है जिसमें महर्षि के प्रभाव से इस क्षेत्र में हो रहे वैदिक संस्कृति के पुनर्जागरण का बड़ा सजीव वर्णन है। महर्षि ने वेद-प्रचार आन्दोलन कर्णवास, अनूपशहर, खुर्जा, सोरों, चासी, अलीगढ़ तथा छलेसर के राजपूत बहुल क्षेत्र से आरम्भ किया था। लुप्त-गुप्त तथ्यों को खोद-खोद कर निकालने वाले इतिहासज्ञ प्रो. राजेन्द्र जी ने वह घटना भी दी है जिसमें कर्णवास में गंगा मेले के अवसर पर आचार्य जी के पिता ठाकूर पूर्णसिंह जी ने अपनी छह-सात वर्ष की आयु में महर्षि दयानन्द सरस्वती के चरणों में अपना शिर रखकर उनसे आशीर्वाद लिया था और गायत्री मन्त्र प्राप्त किया था। आचार्य जी की माता जी के नाम 'तोहफा देवी' की चर्चा बड़े आदर के साथ करते हुए जिज्ञासु जी ने लिखा है- "तोहफ़ा अरबी भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है दुर्लभ (विरला), अनूठा तथा अत्युत्तम वस्तु। सचमुच वह जननी अनूठी ही होगी जिसने ऐसे गुण-सम्पन्न पुत्र-रत्न को जन्म दिया जिसने पौन शताब्दी का लम्बा कालखण्ड अखण्ड निष्ठा से भारतीय दर्शन की सेवा में लगा दिया।"

सतत साधना ग्रन्थ ऐतिहासिक घटनाओं से भरा हुआ है। आचार्य जी बचपन में अपने पिता के साथ साबितगढ़ ग्राम के उस उत्सव में गए जिसमें गुरुकुल सिकन्दराबाद के यशस्वी व्याख्याता पं. मुरारीलाल शर्मा का व्याख्यान

thearyasamaj.org

सुनकर उन्होंने गुरुकुल में पढ़ने का मन बनाया। गुरुकुल सिकन्दराबाद, फर्रुखाबाद, ज्वालापुर, परीक्षा हेतु कलकत्ता और अध्ययन-अध्यापन के क्रम में लाहौर तक आचार्य उदयवीर जी ने नाप डाला। वे पढ़ क्या रहे थे, वास्तव में इतिहास रच रहे थे। विलक्षण प्रतिभा वाले वैदिक विद्वान्, पत्रकार, साहित्यकार पं. पद्मसिंह जी शर्मा, आचार्य नरदेव जी वेदतीर्थ, गुरुवर काशीनाथ आदि के चरणों में बैठकर आपने शिक्षा प्राप्त की और स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, पं. भगवद्दत्त जी जैसे महामनीषियों के युग में काम करने का सौभाग्य उन्हें मिला। आचार्य जी की विद्वत्ता, सज्जनता और प्रतिष्ठा प्रमाणित करने वाली वह घटना भी प्रो. जिज्ञासु जी ने इस ग्रन्थ में दी है जिसमें अमृतधारा फार्मेसी वाले पं. ठाकुरदत्त शर्मा जैसे धनी व्यक्ति ने लाहौर में पं. उदयवीर जी के नैशनल कॉलेज में प्रोफैसर नियुक्त होने पर उनके आवास की व्यवस्था अपने घर में की थी।

आचार्य जी के जीवन से सम्बद्ध सभी महत्त्वपूर्ण घटनाओं का समावेश विद्वान् लेखक ने इस ग्रन्थ में करने का प्रयास किया है। मथुरा में मनाई गयी महर्षि की जन्म शताब्दी में आचार्य जी लाहौर से आकर इसमें सपरिवार सम्मिलित हुए और सबसे गौरवपूर्ण बात तो यह रही कि आपके संग हुतात्मा भगवतीचरण बोहरा भी सपरिवार इस शताब्दी में शामिल हुए।

सन् १९२६ में लाहौर में आचार्य जी की सनातन धर्म संस्कृत कॉलेज लाहौर के प्राचार्य पं. गिरधर शर्मा जी से एकाधिक बार भेंट को भी बड़े भावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत किया है जिससे आचार्य जी की विद्वत्ता, विनम्रता और शालीनता प्रतिष्ठापित होती है। आर्य समाजेतर क्षेत्र में जाने-माने विद्वानों में डॉ. प्रभुदत्त जी ऐसे पहले गम्भीर विद्वान्, गवेषक और लेखक हैं जिन्होंने उस कालखण्ड में आचार्य जी के पाण्डित्य का यथार्थ मूल्यांकन किया।

देश विभाजन की त्रासदी और आर्यसमाज को हुई हानि वाले घटनाक्रम का उल्लेख भी ग्रन्थ में है। क्रान्तिकारियों की गतिविधियों का विवरण, आचार्य जी की उनके साथ सम्बद्धता इसमें दृष्टिगत होती है। राष्ट्रहित में आचार्य जी सब कुछ दाँव पर लगाने को तैयार रहते थे। सतत साधना ग्रन्थ में आचार्य जी की तपस्यापूर्ण साहित्य साधना का चित्रण जिज्ञासु जी ने सफलता से किया। पं. उदयवीर जी शास्त्री ने इतिहास रचा और जिज्ञासु जी ने उसे पृष्ठों पर शब्द-चित्रों में उकेर दिया। घटनाएँ इतनी दी हैं कि गागर में सागर भर दिया। प्रत्येक घटना पूर्वापर सम्बन्ध की दृष्टि से ऐसे रोचक ढंग से लिखी कि पाठक का मन अगली घटना जानने के लिए निरन्तर उत्सुक बना रहे। यह कला तो परमात्मा ने जिज्ञासु जी को भरपूर दी है। १३वें अध्याय में आचार्य जी के एक दो शास्त्रीय लेख भी दिये हैं। पुस्तक के अन्त में लेखक की दो अनुपम कविताएँ एवं आचार्य जी के अभिनन्दन पत्र दिये हैं। ग्रन्थ पठनीय, मननीय एवं ऐतिहासिक दृष्टि से संग्रहणीय है। पुस्तक में आचार्य जी के गुणों की चर्चा कैसी होगी वह इन पंक्तियों से आभास मिल जायेगा-

उदयवीर थे खान गुणों की, उदयवीर गुणियों का गान।
उदयवीर विद्वान् मनीषी, उदयवीर जी ऊहावान्।।
उदयवीर गम्भीर विचारक, उदयवीर नरनामी योद्धा।
उदयवीर जी मूक तपस्वी, उदयवीर जननी की शान।।

-सत्येन्द्रसिंह आर्य, मेरठ

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

मनुष्यों को युक्ति और विद्या से सेवन किये हुए सब सृष्टिस्थ पदार्थ शरीर, आत्मा और सामाजिक सुख कराने वाले होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५७

thearyasamaj.org

वैदिक पुस्तकालय के प्रकाशन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत

वेदभाष्य, वेदभाषाभाष्य, मूलवेद, वेदांगप्रकाश और वैदिक साहित्य

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
	वेद संहिताएँ– (केवल मन्त्र)	
१.	ऋग्वेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	रु. ५००.००
२.	"यजुर्वेद संहिता"(मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	१८०.००
३.	यजुर्वेद संहिता (मूल) सजिल्द (साधारण)	१००.००
४.	सामवेद संहिता (मूल) मन्त्र वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	८०.००
५.	अथर्ववेद संहिता (मूल) मन्त्र– वर्णानुक्रमणिका सहित सजिल्द (बढ़िया)	३५०.००
६.	चतुर्वेद विषय सूची	४०.००
७.	सामवेद के मन्त्रों की वर्णानुक्रमणिका	२.००
८.	ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका सजिल्द	१००.००
९.	ऋग्वेद के प्रथम बाईस मन्त्रों का भाष्य	५.००
	वेद भाष्य–(संस्कृत एवं हिन्दी, दोनों में भाष्य)	
१०.	ऋग्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१५०.००
११.	ऋग्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१२.	ऋग्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२००.००
१३.	ऋग्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
१४.	ऋग्वेदभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	२५०.००
१५.	ऋग्वेदभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	६०.००
१६.	ऋग्वेदभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१७.	ऋग्वेदभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	२००.००
१८.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल प्रथम भाग सजिल्द	७०.००
१९.	ऋग्वेदभाष्य सप्तम मंडल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	६०.००
२०.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल पहला भाग सजिल्द	
२१.	ऋग्वेदभाष्य अष्टम मण्डल दूसरा भाग सजिल्द	
२२.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	१५०.००
२३.	ऋग्वेदभाष्य नवम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द	
२४.	ऋग्वेदभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	२००.००
२५.	ऋग्वेदभाष्य दसवाँ मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वामी ब्रह्ममुनि)	९०.००
२६.	यजुर्वेदभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
२७.	यजुर्वेदभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५०.००
२८.	यजुर्वेदभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	२५०.००
२९.	यजुर्वेदभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	१५०.००
	वेद भाषाभाष्य – (केवल हिन्दी भाष्य)	
३०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य का नमूना	५.००
३१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	२००.००
३२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य तीसरा भाग (सजिल्द)	३५.००
३४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य चौथा भाग (सजिल्द)	२५.००
३५.	ऋग्वेदभाषाभाष्य पांचवां भाग (सजिल्द)	३०.००
३६.	ऋग्वेदभाषाभाष्य छठा भाग (सजिल्द)	३०.००
३७.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सातवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३८.	ऋग्वेदभाषाभाष्य आठवाँ भाग (सजिल्द)	५०.००
३९.	ऋग्वेदभाषाभाष्य (नवाँ भाग) सप्तम मण्डल पहला भाग (सजिल्द)	२५.००

thearyasamaj.org

क्रमांक	नाम पुस्तक	मूल्य
४०.	ऋग्वेदभाषाभाष्य सप्तम मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (पं. आर्यमुनि)	३५.००
४१.	ऋग्वेदभाषाभाष्य अष्टम मण्डल (सजिल्द)	
४२.	ऋग्वेदभाषाभाष्य नवम मण्डल (सजिल्द)	
४३.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल प्रथम भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४४.	ऋग्वेदभाषाभाष्य दसवां मण्डल द्वितीय भाग सजिल्द (स्वा. ब्रह्ममुनि)	४५.००
४५.	यजुर्वेदभाषाभाष्य पहला भाग (सजिल्द)	१००.००
४६.	यजुर्वेदभाषाभाष्य दूसरा भाग (सजिल्द)	३७५.००

स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक विद्यामार्तण्ड

४७.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (पूर्वार्चिक)	
४८.	सामवेद अध्यात्मिक मुनिभाष्य (उत्तरार्चिक) (दोनो खण्डों का सम्मिलित मूल्य)	४००.००
४९.	अथर्ववेदभाष्य – (काण्ड १ से २०) तीन भाग का एक सेट	

विविध

५०.	गोकरुणानिधि (बढ़िया)	५.००
५१.	स्वमन्तव्यामन्तव्य प्रकाश	५.००
५२.	स्वीकारपत्र	३.००
५३.	आर्योद्देश्यरत्नमाला (हिन्दी)	५.००

सिद्धान्त ग्रन्थ

५४.	सत्यार्थप्रकाश (सजिल्द बढ़िया)	१२०.००
५५.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार सजिल्द)	१०.००
५६.	आर्याभिविनय (बड़ा आकार अजिल्द)	७.००
५७.	आर्याभिविनय (गुटका अजिल्द)	७.००

कर्मकाण्डीय

५८.	वैदिक नित्यकर्मविधि	२५.००
५९.	पञ्चमहायज्ञविधि	१२.००
६०.	विवाह–पद्धति	२०.००
६१.	संस्कारविधि (सजिल्द)	७०.००
६२.	हवनमन्त्राः (बड़ा आकार)	५.००

पाखण्ड–खण्डन और शंका–समाधान ग्रन्थ

६३.	अनुभ्रमोच्छेदन	
६४.	भ्रमोच्छेदन (साधारण)	४.००
६५.	भ्रमोच्छेदन (बढ़िया)	१०.००
६६.	भ्रान्तिनिवारण	
६७.	शिक्षापत्रीध्वान्त–निवारण (स्वामीनारायण मतखण्डन)	२.००
६८.	वेदविरुद्धमत–खण्डन	१०.००
६९.	वेदान्तिध्वान्तनिवारण	२.००
७०.	शास्त्रार्थ काशी	८.००
७१.	शास्त्रार्थ हुगली (प्रतिमा–पूजन विचार)	६.००
७२.	सत्यधर्म विचार (मेला चान्दापुर)	७.००
७३.	शास्त्रार्थ जालंधर	३.००
७४.	शास्त्रार्थ अजमेर	३.००
७५.	शास्त्रार्थ बरेली (सत्यासत्य विवेक)	८.००
७६.	शास्त्रार्थ मसूदा	५.००
७७.	शास्त्रार्थ उदयपुर	४.००
७८.	शास्त्रार्थ फिरोजाबाद	१०.००
७९.	महर्षि दयानन्द के शास्त्रार्थ (सजिल्द)	४०.००

शिक्षा व व्याकरण ग्रन्थ (वेदाङ्ग प्रकाश)

८०.	वर्णोच्चारण शिक्षा	१५.००
८१.	सन्धिविषय	
८२.	नामिक	
८३.	कारकीय	१०.००
८४.	सामासिक	
८५.	स्त्रैणताद्धित	
८६.	अव्ययार्थ	५.००
८७.	आख्यातिक (अजिल्द)	१५०.००

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

रक्तसाक्षी पं. लेखराम ने क्या किया? क्या दिया?

- राजेन्द्र जिज्ञासु

मुगलराज के पश्चात् पं. लेखराम आर्य जाति के ऐसे पहले महापुरुष थे जिन्हें धर्म की बलिवेदी पर इस्लामी तलवार कटार के कारण शीश चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे आर्य जाति के एक ऐसे सपूत थे जो धर्म प्रचार व जाति रक्षा के लिए प्रतिक्षण सिर तली पर धरकर प्रतिपल तत्पर रहते थे। उन्हीं के लिए कुँवर सुखलाल जी ने यह लिखा था:-

हथेली पै सिर जो लिये फिर रहा हो
वे सिर उसका धड़ से जुदा क्या करेंगे

पं. लेखराम ने लेखनी व वाणी से प्रचार तो किया ही, आपने एक इतिहास रचा। आपको आर्यसमाज तथा भारतीय पुनर्जागरण के इतिहास में नई-नई परम्पराओं का जनक होने का गौरव प्राप्त हुआ। श्री पं. रामचन्द्र जी देहलवी के शब्दों में उनका नाम नामी आर्योपदेशकों के लिए एक गौरवपूर्ण उपाधि बन गया। वे आर्य पथिक अथवा आर्यमुसाफिर बने तो उनके साहित्य व बलिदान से अनुप्राणित होकर आर्य समाज के अनेक दिलजले आर्य मुसाफिर पैदा हो गये। किस-किस का नाम लिया जावे। मुसाफिर विद्यालय ने पं. भोजदत्त से लेकर ठाकुर अमरसिंह, कुँवर सुखलाल, डॉ. लक्ष्मीदत्त, पं. रामचन्द्र अजमेर जैसे अनेक आर्यमुसाफिर उत्पन्न किये।

धर्म पर जब-जब वार हुआ पं. लेखराम प्रतिकार के लिए आगे निकले। विरोधियों के हर लेख का उत्तर दिया। उनके साहित्य को पढ़कर असंख्य जन उस युग में व बाद में भी धर्मच्युत होने से बचे। श्री महात्मा विष्णुदास जी लताला वाले पं. लेखराम जी का साहित्य पढ़कर पक्के वैदिक धर्मी बने। आप ही की कृपा से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के रूप में एक नवरत्न समाज को मिला।

बख्शी रामरत्न प्रिंसिपल तथा लाला देवीचन्द जी आप ही को पढ़-सुनकर आर्य समाज के रंग में रंगे गये। सियालकोट छावनी में दो सिख युवक विधर्मी बनने लगे। वे मुसलमानी सहित्य पढ़कर सिख मत को छोड़ने का निश्चय कर चुके थे। सिखों की शिरोमणि संस्था सिंह सभा की विनती पर एक विशेष व्यक्ति को महात्मा मुंशी राम जी के पास भेजा गया कि शीघ्र आप सिविल सर्जन पं. लेखराम को सियालकोट भेजें। जाति के दो लाल बचाने का प्रश्न है। पं. लेखराम महात्मा जी का तार पाकर सियालकोट आये। सियालकोट के हिन्दू सिखों की भारी भीड़ समाज मन्दिर में उन्हें सुनने को उमड़ पड़ी। तिल धरने को भी वहाँ स्थान नहीं था।

दोनों युवकों को धर्म पर दृढ़ कर दिया गया। इनमें एक श्री सुन्दरसिंह ने आजीवन आर्य समाज की सेवा की। सेना छोड़कर वह समाज सेवा के लिए समर्पित हो गया।

मिर्जा कादियानी ने सतबचन (सिख मत खण्डन) पुस्तक लिखकर सिखों में रोष व निराशा उत्पन्न कर दी। उत्तर कौन दे। सिखों ने पण्डित जी की ओर रक्षा के लिये निहारा। धर्मवीर लेखराम ने जालन्धर में मुनादी करवा कर गुरु नानक जी के विषय में भारी सभा की। जालन्धर छावनी के अनेक सिख जवान उन्हें सुनने को आये। पण्डित जी ने प्रमाणों व तर्कों की झड़ी लगाकर मिर्जा की भ्रामक व विषैली पुस्तक का जो उत्तर दिया तो श्रोता वाह! वाह!! कर उठे! व्याख्यान की समाप्ति पर सिख सैनिकों में पं. लेखराम जी को कंधों पर उठाने की स्पर्धा आरम्भ हो गई। मल्लयुद्ध के विजेता को अखाड़े में कंधों पर उठाकर जैसे पहलवान घूमते हैं वैसे ही पण्डित जी को उठाया गया।

जाति के लाल बचाने के लिए वे चावापायल में चलती गाड़ी से कूद पड़े। जवान भाई घर पर मर गया। वह सूचना पाकर घर न जाकर दीनानगर से मुरादाबाद मुंशी इन्द्रमणि जी के एक भांजे को ईसाई मत से वापिस लाने पहुँच गये। मौलाना अब्दुल अजीज उस युग के एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर थे। इससे बड़ा पद कोई भारतीय पा ही नहीं सकता था। पं. लेखराम का साहित्य पढ़कर अरबी भाषा का, इस्लाम का मर्मज्ञ यह मौलाना पंजाब से अजमेर पहुँचा और परोपकारिणी सभा से शुद्ध करने की प्रार्थना की। 'देश हितैषी' अजमेर में छपा यह समाचार मेरे पास है। यह ऋषि जी के बलिदान के पश्चात् सबसे बड़ी शुद्धि थी।

स्वयं पं. लेखराम ने इसकी चर्चा की है। यह भी बता दूँ कि इसरो के महान् भारतीय वैज्ञानिक डॉ. सतीश धवन मौलाना के सगे सम्बन्धियों में से थे। आपको ला. हरजसराय

thearyasamaj.org

नाम दिया गया। इन्हें सभा ने लाहौर में शुद्ध किया। तब आर्य समाज का कड़ा विरोध किया गया। अमृतसर के कुछ हिन्दुओं ने आर्य समाज का साथ भी दिया था। स्वामी दर्शनानन्द तब पं. लेखराम की सेना में थे तो उनके पिता पं. रामप्रताप पोपमण्डल के साथ शुद्धि का विरोध कर रहे थे। आज घर वापस की रट लगाने वाले शुद्धि के कर्णधार का नाम लेते घबराते व कतराते हैं। क्या वे बता सकते हैं कि स्वामी विवेकानन्द जी ने किस-किस की घर वापसी करवाई। कांग्रेस का तो आदि काल का बंगाली ब्राह्मण प्रधान बनर्जी ही ईसाई बन चुका था।

मौलाना अब्दुला मेमार ने पं. लेखराम जी के लिये 'गौरव गिरि' विशेषण का प्रयोग किया है। केवल एक ही गैर मुसलमान के लिये यह विशेषण अब तक प्रयुक्त हुआ है। यह है प्राणवीर पं. लेखराम का इतिहास में स्थान व सम्मान।

सिखों में एक 'सिख सभा' नाम की पत्रिका निकाली गई। इसका सम्पादक पं. लेखराम जी का दीवाना था। पं. लेखराम जी का भक्त व प्रशंसक था। उसका कुछ दुर्लभ साहित्य मैं खोज पाया। पं. लेखराम जी जब धर्मरक्षा के लिए मिर्जा गुलाम अहमद की चुनौती स्वीकार कर उसका दुष्प्रचार रोकने कादियाँ पहुँचे तो मिर्जा घर से निकला ही नहीं।

आप उसके इल्हामी कोठे पर साथियों सहित पहुँच गये । मिर्जा चमत्कार दिखाने की डींगें मारा करता था। पण्डित जी ने कहा कुरान में तो 'खारिक आदात' (चमत्कार) शब्द ही नहीं। उसने कहा- है। पण्डित जी ने अपने झोले से कुरान निकाल कर कहा, ''दिखाओ कहाँ है?''

वहाँ यह शब्द हो तो वह दिखाये। मौलवियों ने इस पर मिर्जा को फटकार लगाई है। पण्डित जी ने अपनी तली पर 'ओ३म्' शब्द लिखकर मुट्ठी बन्दकर के कहा, ''खुदा से पूछकर बताओ मैं ने क्या लिखा है?'' सिंह सभा के सम्पादक ने लिखा है कि मिर्जा की बोलती बन्द हो गई। वह नहीं बता सका कि पण्डित जी ने अपनी तली पर क्या लिखा है। अल्लाह ने कोई सहायता न की। पं. लेखराम जी के तर्क व प्रमाण दे कर देहलवी जी ने हैदराबाद के प्रधान मन्त्री राजा सर किशनप्रसाद को मुसलमान बनने से बचाया था।

वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

आर्य समाज के दस नियम

(काव्यानुवाद)

- डॉ. रूपचन्द्र दीपक

आर्य समाज के दस नियमों में सञ्जीवन का सार भरा।
इनका पालन हो जाए तो स्वर्ग बने सम्पूर्ण धरा।।
'जग में हैं जितनी विद्यायें सच्ची, हित की, अविनाशी।
और ज्ञान में आने वाले सब पदार्थ, जल-थल राशी।
इनका ईश प्रथम कारण है' कहता पहला नियम खरा।।
'ईश्वर निर्विकार अनुपम है, जीवों में अन्तर्यामी।
सर्वाधार पवित्र अभय है, सर्व शक्तियों का स्वामी।
निराकार और नित्य अजन्मा, उसे न व्यापें मृत्यु-जरा।।'
वह सर्वेश्वर सब में व्यापक, सन्तत करता न्याय-दया।
सर्वाधार पवित्र अभय है वह अनन्त सृष्टिकर्त्ता।
उपासना का देव वही है ऋषि ने दूजा नियम धरा।।
'चार वेद निर्भ्रान्त ज्ञान है सभी सत्य विद्याओं का।
पढ़ना-पढ़ाना नित्य सुनाना-सुनना वेद ऋचाओं का।
सर्वोपरि कर्त्तव्य आर्य का' नियम तीसरा है गहरा।।
'सत्य को जान तुरत स्वीकारो, सत्य उत्तरों से उत्तर।
जो असत्य है उसे छोड़ने को रहना हरदम तत्पर।'
चौथा नियम यही समझाता, यही है वैदिक परम्परा।।
'धर्म वही जो नित्य सत्य है, उसका ही आचार करो।
जो असत्य है, लाभ लगे तो भी न उसे स्वीकार करो।
तदनुसार सब कर्म कीजिए,' नियम- पाँच में बोध भरा।।
'सब जग का उपकार करें, यह आर्य समाज प्रयोजन है।
तन-मन-धन का, आत्मतत्त्व का, जिसमें शुद्ध उन्नयन है।
ऐसी उन्नति हो जन-जन की' छठे नियम में ध्येय धरा।।
'कर्त्तव्यानुसार, प्रेमवत्, बना नम्र, सम्यक् बुद्धि।
जस गुण-कर्म-स्वभाव व्यक्ति का, देश-काल की परिस्थिति।
तदनुरूप व्यवहार करो' यह नियम -सात में मर्म भरा।।
नियम आठवाँ प्रेरित करता शिथिल करो मानव के पाश।
'तुम्हें ज्ञान-तप से करना है सब अज्ञान-अविद्या नाश।
प्राप्त वृद्धि को ज्यों हों दोनों विद्या अपरा और परा।।'
'निज उन्नति आवश्यक तो है पर होती पर्याप्त नहीं।
सबकी उन्नति में जो माने निज उन्नति है आप्त वही।'
नवे नियम के पालन से ही उन्नत होती वसुन्धरा।।
दसवाँ नियम 'स्वतन्त्र रहें सब निज हितकारी कामों में।
पराधीन कृपया हो रहिए सार्वजनिक कल्याणों में।'
ये आचार-विचार बनें तो सद्य होय सुखधाम धरा।।

- बी-७२, शृंगारनगर, लखनऊ, उ.प्र.-२२६००५

thearyasamaj.org

ऊमर काव्य

- ऊमरदान लालस

राजस्थान के गौरव राजस्थानी भाषा के कवि उमरदान जी का अमर काव्य हमें परोपकारिणी सभा के सम्माननीय सदस्य डॉ. खेतलखानी जी की कृपा से प्राप्त हुआ। इस पुस्तक का तीसरा संस्करण १९३० में प्रकाशित हुआ था। इसमें उमरदान जी की अनेक रचनाओं का संग्रह है। इस पुस्तक के पृष्ठ संख्या ६० से ९४ तक 'दयानन्द री दया' नाम से उनकी रचना प्रकाशित है। कवि और काव्य दोनों ही महत्त्वपूर्ण होने से पाठकों के लाभार्थ दयानन्द दर्शन को प्रकाशित कर रहे हैं। यह एक इतिहास का भाग है। पाठक लाभ उठा सकेंगे।

- सम्पादक

पिछले अंक का शेष......

ऊमर काव्य   ६०

पाँच विषय सूँ इन्द्रिय पांचूं, जीत करो मन जेर।
मोज भरी मनवाली माला, फोज मुक्तरी फेर ॥नहीं॥७
दयानन्द स्वामी दरसायो, सुमरन मारग सार।
आठ पहर ऊमर उर अन्तर, लाग रही ललकार॥नहीं॥८

दयानन्द री दया

(गीत साबभड़ो)

अगहन मास कृत[1] ग्यो आखो[2],
पो[3] त्रेताजुग वीतो पाखो[4]।
द्वापुर माघ महीनों दाखो,
रसा[5] सिधायो[6] आ चित राखो ॥१॥
हिम ते सिसहर रितू विहाई,
दखो वसन्त वात[7] दुखदाई।

१—सत्ययुग-हिन्दुओं की काल गणना के अनुसार ४ युग कृत, त्रेता, द्वापर और कलि हैं। सत्युग १७,२८,००० वर्ष का त्रेता १२,९६,००० वर्ष का द्वापर ८,६४,००० वर्ष का और कलियुग ४,३२,००० वर्ष का माना जाता है। तीन युग तो बीत चुके हैं और इस समय चौथा युग कलि का ५०३१वां वर्ष चल रहा है। सृष्टि संवत (आर्य्यवत्सर) १,९६,२९,४९,०३१वां है। २—पूरा। ३—पौष मास। ४—पक्ष। ५—पाताल। ६—चला गया। ७—हवा।

thearyasamaj.org

ग्रीष्म पावस सरद गहाई,
ए क्यारूं कलियुग में आई ॥२॥
मकर सक्रांयत बैठी मारी,
छत्रिन हित लागी अति खारी।
भू पर ब्राह्मण भये भिखारी,
हे प्रवेश करगी हतियारी ॥३॥
वेद दुसाला वालां बूढां,
राली कांमल[1] नाख्या[2] रूढां[3]।
ग्यांन पथरणों[4] धरियो गूढां,
मेली विद्या रजाई[5] मूढा[6] ॥४॥
लगतां फागण लूरां[7] लागी,
अड़े द्रोण[8] अरु द्रुपद[9] अभागी।
वीरां खाग[10] परस्पर वागी[11],
जिण सूं ज्वाल लड़ण री लागी ॥५॥

१—कम्बल। २—फैंकी, दूर डाली। ३—पुराने ढचरे वाले। ४—शैया में बिछाने का गदला। ५—रुईदार ओढ़ना, दोहर सिरख, लिहाफ जो जाड़े के दिनों में ओढ़ने के काम में आती है। ६—मुँह पर, मूर्ख। ७—घूमरनाच। ८—यह भरद्वाज ऋषि के पुत्र और कौरव पाण्डवों के धनुर्विद्या के गुरु थे। ६—उत्तर पांचाल (रुहेलखण्ड) देश का चन्द्रवंशी राजा द्रुपद, जिसकी पु[illegible]दा को स्वयम्बर सभा में मछली भेद करके अर्जुन [illegible]या था। १०—तलवार। ११—चलाई, चली।

भिड़े भीम[1] अर्जुण[2] कुरु[3] भारत,
  केहर--डांडियां[4] रम कुल गारत।
मर्‍यो सुयोधन[5] गो झक मारत,
  आर्य्यावर्त्त को करगो आरत ॥६॥
राज कर्म में पड़गी रोली,
  मनूं[6] धरम मरजादा मोली[7]।
झड़ी सरस फूलां री झोली,
  हुयगी परम धर्म की होली ॥७॥
अस्त्र गुलाब अबीर उड़ायो,
  शस्त्र पिचरका छिव सरसाया।
वीर नाद ओढ शंख बजायो,
  रंग फाग भीम जंग रचायो ॥८॥

१—चन्द्र वंशी राजा पाण्डु का क्षेत्रज पुत्र जो अत्यन्त बलवान था। ये दूसरा पाण्डव था। मल्लयुद्ध में इसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता था। इससे दुर्योधन सदा भीम से जला करता था। २—यह तीसरा पाण्डव था। इसके बराबर धनुर्विद्या के पण्डित उस जमाने में कम लोग थे। महाभारत के युद्ध में स्वयं श्रीकृष्ण इसका सारथि था। इसके चार रानियाँ थीं। द्रौपदी, सुभद्रा, चित्राङ्गदा और पाताल देश (अमेरिका) की कौरव्य नामक नाग की पुत्री उलूपी। ३—दिल्ली के पास थानेश्वर का मैदान जहाँ कौरव पाण्डवों का युद्ध आज (विक्रमी संवत् १९८६) से ५०३१ वर्ष पहले हुआ था। ४—रास के ढग पर एक नाच। ५—यह अन्ध राजा धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र था। जो महाभारत युद्ध में कौरव दल का नेता था। ६—चलनु महाराज। ७—मन्द।

चलतां चेत बांम—मग[1] चाल्यो,
घाव सधर[2] बेदां पर घाल्यो।
अश्वालम्ब[3] गवालम्ब[4] आल्यो,
झटके गधो सीतला[5] झाल्यो ॥९॥

जैन बांम मान्विया बडजोरां,
गहरे सुर आई गिणगोरां[6] ।
छिन पर मिल मिल छोर्यां छोरां,
करदी सांझी क्यासूं कोरां ॥१०॥

चोरां जुगतीं कुगती कीनीं,
भोग भोगतां भण[7] सुख भीनीं।
कपटी दरसण सूरत कीनीं,
दिव्य भई बोलावणि[8] दीनीं ॥११॥

१—बाममार्ग, कूँडापंथ । २—गहरा । ३—घोड़ों का आधार । ४—गौ सवा । ५—चेचक, शीतला माता । ६—राजपूताने का एक बड़ा त्यौहार जो चैत्र सुदि ३ को मनाया जाता है। ये त्यौहार ईश्वर (महादेव) और गौरी (पार्वती) के गौने (मुकलावा) का सूचक है, या शायद मुद्रा राक्षस आदि नाटकों में "वसन्तोत्सव" के नाम से जो उत्सव वर्णित है उसीने "गणगौर" का रूप धारण कर लिया हो। (देखो इतिहासवेत्ता कुँवर जगदीशसिंह गहलोत द्वारा सम्पादित "मारवाड़ के ग्रामगीत" पृ० ५७)। ७—स्त्री। ८—चंद्र करना, गणगौर त्यौहार के बाद ईश्वर व गौरी की काठ मूर्तियों को वापिस घर भीतर रखने के उत्सव को "बोलावनी" कहते हैं।

शेष भाग अगले अंक में......

thearyasamaj.org

जिज्ञासा समाधान - ८२

- आचार्य सोमदेव

जिज्ञासा १- पुस्तक-सत्यार्थ-प्रकाश प्रश्नोतरी, लेखक श्री कन्हैयालाल जी गुडगाँव, पृष्ठ संख्या ६६५

प्रश्न २२७- जैसे शरीर के बिना सांसारिक सुख नहीं भोग सकता, वैसे मुक्ति में बिना शरीर आनन्द को कैसे भोग सकेगा? उत्तर-सांसारिक सुख भौतिक शरीर के साथ भोगे जाते हैं परन्तु मुक्ति का सुख अभौतिक शरीर, जिसे सूक्ष्म शरीर कहा जाता है, उसके द्वारा भोगा जाता है, पांच प्राण, पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, पांच सूक्ष्म भूत और मन तथा बुद्धि इन १७ तत्त्वों का समुदाय सूक्ष्म शरीर है, यह सूक्ष्म शरीर जन्म-मरण आदि में जीव के साथ रहता है, इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।

शंका

(१) अभौतिक शरीर और सूक्ष्म शरीर दोनों को एक मानना क्या ठीक है?

(२) सूक्ष्म शरीर क्या मुक्ति में बना रहता है?

(३) सूक्ष्म शरीर के साथ मुक्ति सुख भोगना सम्भव है?

सत्यार्थप्रकाश पृष्ठ २७९-

प्रश्न- फिर वह सुख और आनन्द भोग कैसे करता है?

उत्तर- उसके सत्य-संकल्प आदि स्वाभाविक गुण=सामर्थ्य सब रहते हैं 'सत्यार्थप्रकाश--नवम समुल्लास पृष्ठ संख्या २८६'

दूसरा- स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप हैं, यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है, इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।

- राज कुकरेजा, करनाल, हरियाणा

समाधान १- मुक्ति के विषय में दर्शन शास्त्रों व उपनिषदों के ऋषियों ने विस्तार से अपने शास्त्रों में वर्णन किया है। किसी भी ऋषि ने मुक्ति में आत्मा के विशुद्ध स्वरूप के अतिरिक्त अन्य किसी साधन को (भौतिक साधन को) नहीं माना। मुक्ति में तो आत्मा अपने स्वभाविक स्वरूप से परमात्मा के आनन्द का भोग करता है, वहाँ आत्मा को किसी और साधन की आवश्यकता नहीं होती।

आप सिद्धान्तों को जानने वाले हैं इसलिए आपने (सत्यार्थप्रकाश प्रश्नोत्तरी)पुस्तक में आयी असंगत बात को पकड़ लिया, इस कारण आपने अन्य पाठकों के लाभार्थ प्रश्न भेजे हैं। इसका उत्तर लिखने से पहले हम आपको अवगत करा दें कि इस पुस्तक के लेखक श्री कन्हैयालाल जी से मेरी वार्ता हो चुकी है, उनका कथन है जो भी इस संस्करण में त्रुटि रह गई वह त्रुटि अगले संस्करण में सुधार लेंगे। अस्तु।

अब आपके प्रश्नों का उत्तर-

अभौतिक शरीर और सूक्ष्म शरीर दोनों को एक मानना ठीक नहीं है। दोनों भिन्न है। अभौतिक शरीर आत्मा का अपना विशुद्ध स्वरूप ही है। इसके लिए महर्षि ने लिखा- ''दूसरा स्वाभाविक, जो जीव के स्वाभाविक गुणरूप हैं।'' इस अभौतिक शरीर को जीव के २४ प्रकार के सामर्थ्य को भी कहा जा सकता है। वे २४ सामर्थ्य - बल, पराक्रम, आकर्षण, प्रेरणा, गति, भय, विवेचन, क्रिया, उत्साह, स्मरण, निश्चय, इच्छा, प्रेम, द्वेष, संयोग, विभाग, संयोजक, विभाजक, श्रवण, स्पर्शन, दर्शन, स्वादन और गन्धग्रहण तथा ज्ञान है। इसी सामर्थ्य से युक्त आत्मा मुक्ति का सुख भोगता है।

सूक्ष्म शरीर की सत्ता पृथक है। यह प्रकृति के तत्त्वों से बना होता है। महर्षि दयानन्द के अनुसार यह १७ तत्त्वों का है। यही सूक्ष्म शरीर जीवात्मा के साथ जन्म-मरण में आता-जाता है। यह सूक्ष्म शरीर जीवात्मा को परमेश्वर उसके कर्मों के अनुसार सृष्टि के आदि में देता है। यह शरीर जीवात्मा के साथ तब तक लगा रहता जब तक आत्मा की मुक्ति नहीं हो जाती ।

सूक्ष्म शरीर आत्मा की मुक्ति होने के बाद प्रलय को प्राप्त हो जाता है। मुक्ति के बाद आत्मा का इससे कोई सम्बन्ध नहीं रहता। जब यह प्रलय को प्राप्त ही हो गया तो मुक्ति में आत्मा के साथ रहने वाली बात भी समाप्त हो गई।

पाठकों को यह भी जना दें कि इस सूक्ष्म शरीर का प्रयोग आत्मा स्थूल शरीर के माध्यम से ही कर सकता है अर्थात् बिना स्थूल शरीर के सूक्ष्म शरीर की आवश्यकता आत्मा को भौतिक जगत् में ही पड़ती है मुक्ति में नहीं।

सूक्ष्म शरीर के साथ मुक्ति सुख भोगना सम्भव नहीं है, क्योंकि सूक्ष्म, स्थूल शरीरों का सम्बन्ध बद्ध जीवात्माओं के साथ होता है, मुक्त जीवात्माओं के साथ नहीं। शरीर के माध्यम से आत्मा भौतिक सुख-दुःख को ही ग्रहण कर सकता है, अभौतिक परमेश्वर के सुख को नहीं। परमेश्वर के सुख को भोगने के लिए तो जीवात्मा का अपना सामर्थ्य काम करता है। महर्षि लिखते हैं- 'उसके सत्य संकल्पादि

thearyasamaj.org

स्वाभाविक गुण सामर्थ्य सब रहते हैं, भौतिक संग नहीं रहता। जैसे शृण्वन् श्रोत्रं भवति, स्पर्शयन् त्वग्भवति, पश्यन् चक्षुर्भवति, रसयन् रसना भवति, जिघ्रन् घ्राणं भवति।। मोक्ष में भौतिक शरीर वा इन्द्रियों के गोलक जीवात्मा के साथ नहीं रहते किन्तु अपने स्वभाविक शुद्ध गुण रहते हैं।..... जैसे शरीर के आधार रहकर इन्द्रियों के गोलक के द्वारा जीव स्वकार्य करता है, वैसे अपनी शक्ति से मुक्ति में सब आनन्द भोग लेता है।' (स.प्र.९) इसलिए मुक्ति में सूक्ष्म शरीर की कोई आवश्यकता नहीं है।

जिज्ञासा २- हमारे त्रैतवाद के अनुसार आत्मा, परमात्मा एवं प्रकृति तीन अलग-अलग तत्त्व है। महर्षि दयानन्द के अनुसार मनुष्य अगर सत्कर्म करता है तो उसे स्वर्ग की प्राप्ति होती हैं, किन्तु पुण्य क्षीण होने पर फिर मृत्यु लोक में आना पड़ता है। किन्तु प्रश्न उठता है कि मोक्ष क्या है? क्या आत्म साक्षात्कार मोक्ष है? या ईश्वर साक्षात्कार मोक्ष है? क्या मोक्ष के पश्चात् पुर्नजन्म नहीं होता? इसके सम्बन्ध में मन में अनेक प्रश्न उठते हैं, कृपया विस्तार से बतायें ।

- सुरेश शर्मा, अजमेर

समाधान २- वेद के आधार पर महर्षि दयानन्द का मन्तव्य त्रैतवाद का है। महर्षि परमात्मा, जीवात्मा और प्रकृति इन तीनों की स्वतन्त्र सत्ता मानते हैं। जो कि यथार्थ है। प्रकृति साधन है, ईश्वर साध्य है, स्वयं जीवात्मा साधक है, जब जीवात्मा इस जगत् में श्रेष्ठ कर्म करता है, सकाम पुण्य कर्म करता है तब इसको इसके श्रेष्ठ कर्मों के आधार पर अत्यन्त सुख रूप फल मिलता है। जब पाप करता है तब दुःख रूप फल भोगता है। आपने सत्कर्मों से स्वर्ग की प्राप्ति कही, आपकी बात से लगता है कि आप स्वर्ग को किसी लोक विशेष पर मानते हैं। आप को बता दें ऋषि ने स्वर्ग नरक को किसी लोक विशेष पर नहीं माना है । ऋषियों की मान्यता हैं कि जीव को विशेष सुख और सुख की सामग्री का प्राप्त होना स्वर्ग है। वह इस लोक वा अन्य लोकों पर भी हो सकता है। नरक विशेष दुःख और दुःख की सामग्री को प्राप्त होना है। इस आधार पर स्वर्ग नरक कहीं भी अर्थात् किसी भी लोक पर हो सकता है।

यह समस्त संसार ही मृत्यु लोक है, संसार में रहना ही मृत्यु लोक में रहना है। चाहे जीवात्मा के पास स्वर्ग है अथवा नरक, दोनों अवस्थओं में मृत्यु लोक में ही रहता है। अमृत लोक तो परमेश्वर ही है।

आपने पूछा मोक्ष क्या है? मोक्ष दुःखों से नितान्त छूटने का नाम है। जिसमें दुःख का लेश भी नहीं होता सर्वथा सदा परमेश्वर के आनन्द में रहना मोक्ष है। इसी को वेद व अन्य शास्त्रों में अमृत, अमृतत्व पद, निःश्रेयस् अपवर्ग, मुक्ति, हान, ब्रह्मलोक, अत्यन्त पुरुषार्थ, शाश्वतसुख, परमपद जैसे शब्दों से कहा है। महर्षि दयानन्द मुक्ति के विषय में अपना मत लिखते हैं कि "सब दुःखों से छूटकर बन्धन रहित सर्वव्यापक ईश्वर और उसकी सृष्टि में स्वेच्छा से विचरना, नियत समय पर्यन्त मुक्ति के आनन्द को भोग के पुनः संसार में आना।" आपने जो पूछा था कि मोक्ष क्या है, आपके इस प्रश्न का उत्तर महर्षि की इस परिभाषा में स्पष्ट हो गया। वह मोक्ष आत्म साक्षात्कार अथवा परमात्म साक्षात्कार नहीं है अपितु सब दुःखों से छूटना मोक्ष है।

जब हम दुःख के कारण को नष्ट कर देंगे तब हम दुःख से छूट सकते हैं। इस विषय में महर्षि गौतम ने अपने न्याय दर्शन में कहा-

दुःखजन्मप्रवृत्तिदोषमिथ्याज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये
तदनन्तरापायादपवर्गः।

अर्थात् दुःख का कारण जन्म है, शरीर का बन्धन है जब शरीर (जन्म) नहीं तो दुःख भी नहीं, जन्म का कारण प्रवृत्ति है अर्थात् अधर्म, अन्याय विषयासक्ति की वासना है। ये प्रवृत्ति होगी तो जन्म भी होगा और जन्म है तो दुःख है। इस प्रवृत्ति का कारण लोभादि दोष हैं और दोष का कारण मिथ्याज्ञान अर्थात् अविद्या है। अर्थात् दुःख का मूल कारण तो अविद्या है। जब जीव की अविद्या नष्ट होगी तो दोष नहीं होंगे, दोष के न होने से प्रवृत्ति नहीं रहेगी और प्रवृत्ति के न होन पर जन्म नहीं होगा, जब जन्म नहीं होगा तो जीव को दुःख भी नहीं होगा। अर्थात् जीव दुःख रहित मोक्ष अवस्था में होगा। इसलिए दुःख के कारण को हटाने से मोक्ष होता है, केवल आत्मा वा परमात्मा साक्षात्कार से नहीं।

उपरोक्त महर्षि की परिभाषा से यह भी स्पष्ट है कि मोक्ष के पश्चात् पुनः जन्म होता है। केवल महर्षि दयानन्द ही मोक्ष से लौटना नहीं मानते अपितु शंकराचार्य भी जीव का मोक्ष से लौटना मानते हैं। देखिये छान्दोग्य उपनिषद् के (३.१५.१) के भाष्य में क्या लिखते हैं-

यावद् ब्रह्मलोक स्थितिः तावत्तत्रैव तिष्ठति,
प्राक्ततो नावर्त्तत इत्यर्थः।

अर्थात् जब तक ब्रह्मलोक में स्थिति है तब तक जीव वहीं रहता है, अवधि की समाप्ति से पूर्व नहीं लौटता।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अत: आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

thearyasamaj.org

अतिथि यज्ञ के होता

(१ से १५ फरवरी २०१५ तक)

१. श्री किशोर काबरा, अजमेर २. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ३. श्री ओजस, केनडा ४. डॉ. रमेश क्षेत्रपाल, अजमेर ५. श्री रणवीरसिंह बलहरा, रोहतक, हरि. ६. श्री मनोज आर्य, हरि. ७. श्री पी.के. मिश्रा, हरिद्वार ८. श्रीमती कमला पंचोली, अजमेर ९. श्रीमती मेहता माता, अजमेर १०. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर ११. श्री के.के. तनेजा, दिल्ली १२. श्री रमेश मुनि, अजमेर १३. सुश्री श्रुति बंसल, नई दिल्ली १४. श्री राजेन्द्रसिंह राठौड़, अजमेर १५. श्री दिनेश कुमार प्रजापति, दिल्ली १६. श्री गौरव, दिल्ली १७. श्री अशोक मेहता, नई दिल्ली १८. श्री राहुल शुक्ला, जयपुर, राज. १९. श्री यदुनन्दन आर्य, बिहार २०. श्रीमती उषा आर्या, अजमेर २१. श्री वासुदेव आर्य, अजमेर २२. श्री तेजवीरसिंह, नई दिल्ली २३. श्री विरदीचन्द गुप्त, जयपुर, राज. २४. श्री आशीष खण्डेलवाल, अजमेर २५. श्री आयुष चौधरी, अजमेर २६. श्री बी.के. गोस्वामी, दिल्ली २७. श्रीमती आशा चौधरी, गाजियाबाद २८. श्री राजेन्द्र प्रकाश माथुर, जोधपुर, राज. २९. श्री सुशील कुमार मन्धना, मुम्बई ३०. श्री एम.एल. गोयल, अजमेर ३१. श्री विजय अग्रवाल, मुम्बई।

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौओं को उत्तम चारा मिले इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चेक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएंगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता

(१ से १५ फरवरी २०१५ तक)

१. श्री राजेश त्यागी, अजमेर २. श्री श्याम गिल, अजमेर ३. श्रीमती कौशल्या देवी, अजमेर ४. डॉ. बद्रीप्रसाद पंचोली, अजमेर ५. श्रीमती सुन्दर देवी, जयपुर, राज. ६. श्री दिवाकर गुप्ता, अजमेर ७. डॉ. लोकेन्द्र त्यागी, नागौर, राज. ८. श्रीमती पुष्पा लोढ़ा, अजमेर ९. श्री नकुलसिंह, अजमेर १०. श्रीमती ज्योतिरानी, श्यामली, उ.प्र. ११. स्वामी वेदरक्षानन्द सरस्वती, गुरुकुल कालवा १२. डॉ. बलराजसिंह, अजमेर १३. श्री विराजमान, नैनिताल १४. श्री अमित मालु, किशनगढ़, राज. १५. श्री अंकित बिरला, अजमेर १६. श्रीमती उषा आर्या, अजमेर १७. श्री राजेश अग्रवाल, अजमेर १८. आर्यसमाज विजयनगर, राज. १९. श्रीमती लीलादेवी गंगाविशन आर्य, विजयनगर, राज. २०. श्रीमती ज्ञानवती रामेश्वरलाल आर्य, विजयनगर, राज. २१. श्रीमती मंजू आर्या, विजयनगर, राज. २२. श्री हरिनारायण आर्य, विजयनगर, राज. २३. श्री लक्ष्मणस्वरूप आर्य, विजयनगर, राज. २४. श्री मोतीलाल आर्य, विजयनगर, राज. २५. श्रीमती कमलदेवी आर्या, विजयनगर, राज. २६. श्री मुकेश रूपचन्द आर्य, विजयनगर, राज. २७. श्रीमती फूलकँवर बसन्तीलाल आर्या, विजयनगर, राज. २८. श्री कन्हैयालाल आर्य, विजयनगर, राज. २९. श्री भँवरलाल मदनलाल आर्य, विजयनगर, राज. ३०. श्रीमती मधुबाला रामचरण कुमावत, देवली, राज. ३१. श्रीमती पूजा देवी ऋषि आर्य, विजयनगर, राज. ३२. श्री विरदीचन्द गुप्ता, जयपुर, राज. ३३. श्री कन्हैयालाल वैष्णव, अजमेर ३४. श्री शान्तिस्वरूप टिक्कीवाल, जयपुर, राज. ३५. श्रीमती आशा चौधरी, गाजियाबाद ३६. श्रीमती विमला देवी नागवाल, अजमेर ३७. श्री किशोर काबरा, अजमेर

- परोपकारिणी सभा, अजमेर।

thearyasamaj.org

स्तुता मया वरदा वेदमाता-५

इस मन्त्र के **अविद्वेषम्**-और-**सहृदयम्** शब्दों के बाद चिन्तन करने योग्य शब्द है- **सामनस्यम्**- हम संसार में सुख की इच्छा करते हैं परन्तु हमें सुख के साधनों का बोध नहीं होता इसलिए हमारी इच्छा पूरी नहीं हो पाती। वेद कहता है आप अपने को सुखी बनाना चाहते हैं तो पहले अपने को **अविद्वेषम्** बनना होगा अर्थात् द्वेष रहित करना होगा। असफलता अभाव में दु:ख वस्तु के न मिलने से उतना नहीं होता जितना उस से जुड़े राग-द्वेष से होता है सहृदयम्- हमारी अनुभूति का क्षेत्र है सामनस्यम् हमारे विचार की भूमि है। हमारे अच्छे विचारों का बीज मन में ही अंकुरित होता है। वह बीज अच्छा न हो तो अंकुर कैसे अच्छा होगा? आगे फल की कल्पना करना तो नितान्त व्यर्थ है।

सुख का आन्तरिक सम्बन्ध मन से है और उसका बाह्य साधन सद्व्यवहार है। दूसरे शब्दों में शास्त्र कहता है धर्माचरण से ही सुख होता है। धर्माचरण कारण है सुख उसका कार्य है, परिणाम या फल है। यह एक चक्र है सद्विचार से सदाचार और सदाचार से सुख। इस क्रम का कोई विकल्प नहीं है। सद्विचार के अभाव से या विपरीत विचार से दोनों से ही सुख नहीं हो सकता है। संसार में सुख साधन धर्म है। हमें लगता है सुख वस्तुओं से मिलता है इसलिए हम वस्तुओं के संग्रह पर बल देते हैं। वस्तुएँ धन से प्राप्त होती हैं अत: हम धन के संग्रह को सुख का आधार मान बैठे हैं। सत्य तो यह है कि संसार के साधन सांसारिक समस्याओं का समाधान करने के लिए बने हैं। यह शरीर भौतिक है इसका निर्माण या विनाश, वृद्धि और ह्रास सभी भौतिक साधनों पर निर्भर है। इन साधनों से ही इसका जन्म, वृद्धि, ह्रास, लय सब कुछ होता है। इनके अभाव से असुविधा का कष्ट अवश्य होता है परन्तु सुख में इनकी आवश्यकता बहुत न्यून है, भूख-प्यास, गरमी-सर्दी शारीरिक आवश्यकताएँ हैं, रोग में औषध, पथ्य ये सब साधनों पर निर्भर करता है। किन्तु इनके मिल जाने पर सुख मिल जायेगा यह अनिवार्य नहीं है सुख का अनुभव मन का विषय है।

आत्मा और शरीर के मध्य मन सबसे महत्त्वपूर्ण कड़ी है। शरीर का संचालन मन से होता है, आत्मा को संसार की प्रतीति मन से होता है। मन भौतिक है परन्तु शरीर से भिन्न है, मन जड़ है फिर भी आत्मा के सन्निकटता से चैतन्य का अनुभव करता है। शरीर से मन बलवान् है। शरीर का संचालक है, ऐसा प्रतीत होता है इस शरीर का स्वामी मन ही है। मन के सामर्थ्य को देखकर सामान्य मनुष्य मन की आलोचना करते हैं। मन को हठी, नियन्त्रण में ही नहीं आने वाला व बलवान् मानते हैं। मन बलवान् है यह इसका दोष नहीं है। शरीर की भाँति मन भी आत्मा का साधन है। इसका बलवान् होना इसका दोष नहीं इसका गुण है, यह मन की विशेषता है। यह आत्मा को संसार से मुक्ति तक ले जाने का उपाय है। कौन ऐसा मनुष्य होगा जो लम्बी यात्रा में निकल कर भी, छोटे और कमजोर साधनों से यात्रा करना चाहेगा। इसी प्रकार आत्मा की यात्रा का साधन यह शरीर और मन हैं, शरीर दुर्बल साधन है, इसके जर्जर होने पर इसे छोड़कर दूसरा लेना पड़ता है परन्तु मन सृष्टि से प्रलय तक या मुक्ति तक एक ही चलता है। ऐसे वाहन की प्रशंसा की जानी चाहिए आलोचना नहीं। कोई तांगे वाला कहे मेरा घोड़ा बलिष्ठ और वेगवान् है यह उसका दोष नहीं गुण है उसी प्रकार मन का बलवान् होना दोष नहीं गुण है।

आधुनिक समय में मन को समझने का प्रयास दर्शन के अध्ययन से हुआ है। आधुनिक दर्शन ने मन के अध्ययन को दर्शन से पृथक् तो कर लिया, परन्तु उसका अध्ययन बहुत आगे नहीं बढ़ सका। आधुनिक लोग मन को पढ़ने और समझने के लिए मनोविज्ञान या मानस शास्त्र का आश्रय लेते हैं। परन्तु मन इनके लिए बाहरी व्यवहार का अदृश्य कारण मात्र है, वे कार्य भेद से मन के भेद करते हैं, प्राचीन लोग मन के भेद से कार्य के भेद करते हैं। मन के भेद से कार्य का भेद करने से कार्यों का वर्गीकरण सरल हो जाता है। इसके विपरीत कार्य भेद से मन के भेद करने पर वर्गीकरण का बहुत विस्तार हो जाता है। प्राचीन शास्त्र मन के चार भेद करते हैं जिन्हें अन्त:करण चतुष्टय कहा जाता है। जिसमें मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार का समावेश होता है। इसके स्थान पर आधुनिक लोग मन के चेतन, अचेतन, अवचेतन तीन भेद करते हैं। इसमें हमारे कार्य व्यवहार चल रहे हैं वह चेतन मन है, जो व्यापार में नहीं वह अचेतन और जिसमें संस्कार गहरे चले जाते हैं उसे अवचेतन कहा गया है। मन के इन भेदों का अध्ययन व्यवहार विचार और स्वप्न से होता है। हम मन में क्या सोचते हैं? दूसरे को जल्दी से पता नहीं चलता। प्राणी की

thearyasamaj.org

शारीरिक क्रियाओं से उसके मन में चल रहे विचारों का बोध होता है। इसका भी पूर्ण रूप से पता लगाना कठिन है। जो कार्य मनुष्य नहीं कर पाता उसे विचार से कर लेता है। जिस वस्तु की प्राप्ति किन्हीं कारणों से मनुष्य को व्यवहार जगत् में नहीं होती, उसकी कल्पना मनुष्य विचार जगत् में कर लेता है। यही विचार अन्तर्मन में स्थान बना लेते हैं, कभी अवसर मिलने पर स्वप्न के माध्यम से प्रकाशित होते हैं। मनोवैज्ञानिक जिस प्रकार व्यवहार से मन का अध्ययन करते हैं उसी प्रकार स्वप्न का अध्ययन करके भी मनुष्य के अन्तर को पढ़ने का यत्न करते हैं।

मन आत्मा के साथ देर तक रहने वाला है इसकी शक्ति और इसका उपयोग भी उतना ही अधिक है। जन्म से मरण तक तथा संसार से मुक्ति तक की जाने वाली आत्मा की यात्रा का यही साथी है। इसलिए हर अच्छे-बुरे का यही उत्तरदायी है। आत्मा इसी के माध्यम से अपनी सामग्री को इधर से उधर ले जाता है। दर्शन की भाषा में यह सामग्री संस्कार के नाम से जानी जाती है। शब्द शरीर की क्रिया से प्रकाशित होते हैं, मन में उत्पन्न होते हैं, चेतन के लिये उत्तरदायी होते हैं। चेतन आत्मा की इच्छा मन के माध्यम से स्थूल शरीर में प्रकाशित होती है। इसी कारण कोई भी क्रिया का विचार पहले मन में आता है उसके पश्चात् शरीर से परिलक्षित होता है। मनुष्य जो करता है या करना चाहता है पहले उसके मन में आता है फिर जैसा उसके मन में आता है वह वैसा करता है। चोर चोरी करता है तब भी पहले मन से उत्पन्न योजना पर विचार करता है फिर उसको कार्य में लाता है। जिसे हम अच्छा व्यक्ति कहते हैं, जो परोपकारी है, धार्मिक है, ईश्वर भक्त है, वह भी जो कुछ करता है वह उसका विचार पहले मन में करता है तब उसे व्यवहार में लाता है। अत: हम किसी व्यक्ति को अच्छा बनाना चाहते हैं तो अच्छे विचार से जोड़ना होगा, उसके मन में अच्छे विचार उत्पन्न होने चाहिए तभी वह अच्छे कार्य कर सकता है, व्यक्ति अच्छा बन सकता है। इसी कारण मन्त्र में अविद्वेषम्, सहृदयम् के साथ **सामनस्यम्** शब्द पढ़ा गया है। हमारे मन में सुख पहुँचाने की इच्छा ही परिवार समाज को सुखी कर सकती है।

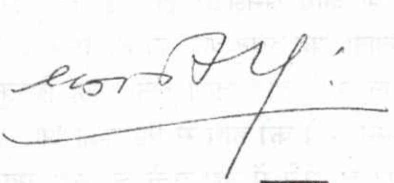

क्रमश: ....

वेद-गोष्ठी वर्ष २०१४ के पुरस्कार हेतु निबन्ध आमन्त्रित हैं

मुनि स्थिर निधि की ओर से वेद-गोष्ठी में पढ़े जाने वाले निबन्धों को पुरस्कृत करने की योजना है। पुरस्कार राशि निम्न प्रकार निर्धारित है-

प्रथम पुरस्कार - ६१००.०० रु.

द्वितीय पुरस्कार - ४१००.०० रु.

तृतीय पुरस्कार - ३१००.०० रु.

तृतीय पुरस्कार नव लेखकों ३० वर्ष की आयु तक के लिए निश्चित किया गया है।

जिन विद्वानों ने इस वर्ष ऋषि मेले के अवसर पर सम्पन्न वेद-गोष्ठी में निबन्ध वाचन किया है। यदि वे अपने निबन्ध में संशोधन करने के इच्छुक हैं तो वे १ मार्च २०१५ तक अपने संशोधित निबन्ध संयोजक वेद-गोष्ठी, परोपकारिणी सभा, अजमेर के पते पर भेज सकते हैं।

यदि कोई विद्वान् अभी तक अपना निबन्ध नहीं भेज पाये हैं वे भी १ मार्च २०१५ तक इसी विषय पर निबन्ध लिखकर भेज सकते हैं।

पश्चात् निबन्ध चयन समिति को भेजे जायेंगे। उनका निर्णय अन्तिम और मान्य होगा। पुरस्कार ऋषि मेला समारोह में प्रदान किये जायेंगे।

वेद-गोष्ठी का विषय "**भारतीय मत सम्प्रदाय और वेद**"

- संयोजक वेद-गोष्ठी

जो विद्वान् लोग परोपकार बुद्धि से विद्या का विस्तार करने, सुगन्धि, पुष्टि, मधुरता रोगनाशक गुणयुक्त पदार्थों का यथायोग्य मेल अग्नि के बीच में उनका होम कर शुद्ध वायु वर्षा का जल वा ओषधियों का सेवन करके शरीर को आरोग्य करते हैं वे इस संसार में अत्यन्त प्रशंसा के योग्य होते हैं।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.५८

thearyasamaj.org

संस्था - समाचार

१ से १५ फरवरी २०१५

परमपिता परमेश्वर की असीम कृपा से, सभा कार्यकर्त्ताओं के पुरुषार्थ से व आप सभी के सहयोग से सभा की सभी गतिविधियाँ यथा-प्रात: सायं यज्ञ, प्रवचन, गुरुकुल, अतिथियों, आश्रमवासियों के लिए भोजन, गौशाला, चिकित्सालय, परोपकारी पत्रिका व अन्य ग्रन्थों का प्रकाशन, जनसम्पर्क व प्रचार कार्यक्रम पिछले दिनों भी यथावत चलती रही।

प्रात:कालीन प्रवचन के क्रम में **डॉ. धर्मवीर जी** ने **'शची पौलोमी सूक्त'** (ऋ. १०/१५९) की व्याख्या प्रस्तुत की। इस सूक्त की प्रासंगिकता की चर्चा करते हुए आपने बताया कि मनुष्यों और पशुओं में कुछ प्रवृत्तियों में काफी समानता पायी जाती है। यथा- भोजन, निद्रा, भय, सन्तानोत्पत्ति आदि। इसी तरह अपने को श्रेष्ठ मानना व दूसरों को कमतर आंकने की प्रवृत्ति। जैसे मनुष्यों में यह अभिलाषा होती है कि मेरा वर्चस्व सब में बना रहे उसी प्रकार पशु भी सभी में अपना वर्चस्व बनाए रखना चाहते हैं। जहाँ पशुओं में वर्चस्व का निर्धारण उनके बल से होता है वहीं मनुष्य में इसका निर्धारण बुद्धि से होता है। जहाँ मनुष्य बुद्धिपूर्वक बल का प्रयोग दो प्रकार से कर सकता है अर्थात् वह अपने सामर्थ्य से चोरी भी कर सकता है और दान भी कर सकता है वहीं पशु केवल छीन ही सकता है। दान की प्रवृत्ति उसमें नहीं पाई जाती। इसे दूसरे शब्दों में कहें तो मनुष्य अपने बल का, बुद्धि का धर्मपूर्वक प्रयोग कर सकता है और अधर्मपूर्वक भी कर सकता है, दोनों प्रकार से प्रयोग करने में वह स्वतन्त्र है। इस प्रसंग में महर्षि दयानन्द के विचार बड़े ही प्रासंगिक लगते हैं। महर्षि के अनुसार व्यक्ति को न केवल धार्मिक बनना चाहिए बल्कि उसे विद्वान् भी बनना चाहिए। हाँ ये भी सत्य है कि विद्वान् बनना सरल नहीं है, क्योंकि विद्यार्जन में जिस पुरुषार्थ की आवश्यकता होती है वह सभी नहीं कर सकते, लेकिन सभी धार्मिक अवश्य बन सकते हैं। जब व्यक्ति केवल धार्मिक होता है तो कोई उसकी आस्था का दुरुपयोग भी कर सकता है। वह कई बार धर्म को अधर्म भी मान सकता है। जहाँ केवल धार्मिक मूर्ख होता है वहीं केवल विद्वान् धूर्त होता है। वह अपने स्वार्थ की सिद्धि में ही तत्पर रहता है। चाहे वह धूर्त परिवार में हो, समाज में हो या राष्ट्र में सर्वत्र धूर्त्तता ही करता रहता है।

इसी प्रसंग में सूक्त की व्याख्या करते हुए उससे सम्बन्धित अनेक विषयों की दृष्टान्त सहित व्याख्या प्रस्तुत की। इसी प्रसंग में 'यज्ञ' की महत्ता बताते हुए आपने स्पष्ट किया कि यज्ञ वातावरण के लिए अनिवार्य है। यज्ञ का हमारे प्राण से साक्षात् सम्बन्ध है। यज्ञ की विधि का निर्देशन ऋषियों द्वारा किया गया है और ऋषियों की यही महानता है कि वे बहुत महत्त्वपूर्ण बात को बड़े साधारण ढंग से प्रस्तुत करते हैं या यूँ कहें कि महत्त्वपूर्ण बात को साधारण ढंग से आसान कार्य के रूप में प्रस्तुत कर देते हैं और कहते हैं कि 'भाई यह धर्म है, इसे कर लिया करो' यहाँ धर्म का अभिप्राय विकल्प से नहीं कि करो या मत करो, आपकी मर्जी है बल्कि धर्म का अभिप्राय अनिवार्यता से है कि करोगे तो लाभ में रहोगे, नहीं करोगे तो हानि उठाओगे। तो कृतकर्मों में (धर्म में) सहज स्वाभाविक रूप में यज्ञ को जोड़ दिया। यज्ञ को यह सोचते हुए धर्म में जोड़ दिया गया कि मनुष्य उसका अनुष्ठान करेंगे तो उससे जो लाभ होना है वह अपने आप हो जाएगा। लाभ को पृथक् से बताने की आवश्यकता नहीं समझी। यज्ञ में कोई भी चीज उठाने, रखने की क्रिया अमुक प्रकार से की जाती है, उस क्रिया को करने का एक प्रयोजन है। जैसे कि कोई प्रश्न करें कि यज्ञ में कलश रखने का क्या प्रयोजन है? जब हम अग्नि के साथ व्यवहार करते हैं तो हमें यह समझना चाहिए की अग्नि जड़ है, अग्नि यह नहीं पहचानता कि यह हवन कर रहा है या माँस पका रहा है। अग्नि को तो जलाने से मतलब है या अग्नि समझदार होता है कि नहीं भाई इसे नहीं जलाना, यह हवन कर रहा है, हमारे यहाँ कहावत है कि हवन करते हाथ जला लेना। यह बिल्कुल ऐसा है कि किसी बच्चे को हाथ से खिलाओ और वह आपका हाथ काट ले, ऐसे में उस बच्चे को कौन खिलाएगा? हम तो

thearyasamaj.org

छोड़ देंगे। लेकिन यज्ञ के साथ हम ऐसा नहीं कर सकते, आप उसे करना नहीं छोड़ सकते अत: सावधानी तो आपको ही रखनी पड़ेगी। तो जब अग्नि का प्रयोग हमें करना ही है तो आवश्यक रूप से समझदारी भी हमको रखनी ही होगी और इसी समझदारी का नाम ऋषियों ने धर्म रख दिया। इसी प्रकार यज्ञ आदि में कलश रखने को धर्म के साथ जोड़ दिया गया, क्योंकि जब हम अग्नि के साथ व्यवहार करते हैं तो जल की उपस्थिति स्वभाविक रूप से होनी चाहिए। चाहे आपको प्यास लगे या आग लगे दोनों ही परिस्थितियों में जल तो चाहिए ही। जल के बिना यज्ञ हो सकता है, होने में कोई बड़ी बात नहीं लेकिन करते समय जब कोई दुर्घटना हो जाए, जल की आवश्यकता पड़े तो **'संदीप्ते भवने तु कूपखननं प्रत्युद्यमः कीदृशः'** आग लगने पर कुआँ खोदना कोई बुद्धिमानी नहीं है।

आचार्य सोमदेव जी ने अपने प्रवचन क्रम में ईश्वर, जीव, प्रकृति, धर्म, सदाचार, संस्कृति, चरित्र-निर्माण से सम्बन्धित अनेक विषयों पर प्रकाश डाला। आपने लोकेषणा की चर्चा करते हुए बताया कि हमारे शास्त्रों में अनेकत्र वित्तेषणा, पुत्रेषणा व लोकेषणा की चर्चा है। यद्यपि लोकेषणा व्यक्ति को अत्यन्त कष्ट देती है लेकिन फिर भी लौकिक व्यक्ति के लिए यह प्राप्तव्य है। तो जब अधिकांश व्यक्ति ख्याति प्राप्त करना चाहते हैं तो वे कौन से साधन है जिनसे उसे ख्याति मिल सकती है? इस प्रश्न का समाधान आपने-

अष्टौ गुणाः पुरुषं दीपयन्ति प्रज्ञा च कौल्यं च दमः श्रुतं च।
पराक्रमश्चाबहुभाषिता च दानं यथाशक्ति कृतज्ञता च।।

-विदुरनीति १/१०४

इस श्लोक की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि महात्मा विदुर के अनुसार प्रज्ञा (बुद्धि), कुलीनता, संयम, विद्वत्ता, पराक्रम, मितभाषण, दान और कृतज्ञता, ये आठ गुण व्यक्ति को प्रसिद्धि दिलाते हैं। पुन: इसकी व्याख्या करते हुए आपने बताया कि जिसके पास बुद्धिबल होता है, उसे निश्चित ही ख्याति मिलती है। आप देख सकते हैं इन दिनों दूरदर्शन में कौटिल्य नामक एक बालक की धूम मची है। इतनी छोटी अवस्था में इतनी बड़ी ख्याति। ख्याति इसलिए कि उसकी बुद्धि इतनी सक्रिय कि कुछ भी देखता, सुनता एक बार में ही उसकी स्थाई स्मृति बना लेता, कुछ भी पूछो आगे से या पीछे से, सब कुछ बता देगा। तो प्रज्ञा से ख्याति मिलती है। महात्मा विदुर ने दूसरा गुण बताया- 'कुलीनता' यदि किसी व्यक्ति को बुद्धि न भी मिले, उत्तम कुल ही मिल जाए, उत्तम कुल में जन्म लेने मात्र से वह प्रकाशित हो जाता है। प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने विवाह तो किया लेकिन राष्ट्रसेवा के लिए सन्तान उत्पन्न नहीं की, लेकिन यदि किसी प्रधानमन्त्री को प्रधानमन्त्रित्व के काल में ही सन्तानोतपत्ति हो, तत्काल संचार के सभी साधनों में छा जाता है कि हमारे प्रधानमन्त्री जी के यहाँ सन्तान हुई है। उसके नामकरण तो क्या, उसकी छोटी-छोटी घटनाएँ भी तत्काल प्रकाशित हो जाती हैं। पुन: तीसरा गुण बताया- दम (दमनशीलता)। शम, दम दोनों शब्दों का लगभग एक जैसा अर्थ है उपरम हो जाना, (विषयों से) हट जाना। अर्थात् जो व्यक्ति दमनशील होता है, जितेन्द्रीय होता है निश्चित ही ख्याति को प्राप्त करता है। स्वामी आत्मानन्द जी (सवाई माधोपुर) का दृष्टान्त देते हुए आपने बताया कि स्वामी जी पहले पौराणिक थे, आश्रम में मन्दिर था, मन्दिर में कई देवी-देवताओं की प्रतिमा थी, कहीं से सत्यार्थप्रकाश मिल गया, पढ़ा तो समझ में आया कि यह तो पाखण्ड है, झठ सारी मूर्तियाँ उठाकर अलग कर दी। आचार्य जी ने बताया कि स्वामी जी का जीवन आपने निकट से देखा है- स्वामी जी के जीवन में जितेन्द्रियता है, इन्द्रियों का कोई आक्रमण आपको अपनी ओर खींच नहीं पा रहा, संसार में कोई आसक्ति दिखाई नहीं देती, इस समय लगभग ९२ वर्ष की अवस्था में भी, हाड़ कंपाती ठंड में भी एक छोटा सा अंगोछा जैसा वस्त्र नीचे पहन लिया, एक वस्त्र ऊपर डाल लिया। तो इस जितेन्द्रयता के कारण आपकी ख्याति इतनी कि हजारों-हजारों की संख्या में आपके भक्त ऐसे हैं किसी बात को लेकर उन्हें डाँटें भी तो भक्त ऊफ तक नहीं करते। इसी प्रकार 'श्रुतम्' (विद्वत्ता, बहुत अधिक अध्ययन करने वाला) भी प्रसिद्धि को प्राप्त करता है। आगे कहा कि पराक्रमी व्यक्ति भी बहुत शीघ्र प्रकाशित होता है। पराक्रम- एक तो युद्ध करने का है, तलवार चलाने का है और दूसरा शत्रु के सामने निर्भीक रहना है, शत्रु के सामने तलवार नहीं चलाई, लेकिन शत्रु के सामने निर्भीक खड़ा रहा है, यह भी पराक्रम

thearyasamaj.org

ही है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के वीर बलिदानी क्रान्तिकारियों के दृष्टान्त से आपने बताया कि अनेकों अवसर पर भारत माता के ये वीर सपूत, दुश्मन तो क्या, मृत्यु को सामने देखकर भी घबराए नहीं। इसी प्रकार मितभाषी, दानी और कृतज्ञ व्यक्तियों के दृष्टान्तों से आपने महात्मा विदुर की बात को सिद्ध किया कि जो इन आठ गुणों को अपनाता है निश्चित ही ख्याति को प्राप्त करता है।

सायंकालीन सत्संग के क्रम में मेरठ से आये हुए **श्री सत्येन्द्रसिंह आर्य** सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय कराते रहे। इस समय तृतीय समुल्लास पर चर्चा चल रही है। महर्षि जी ने ब्रह्मचर्याश्रम में केवल ब्रह्मयज्ञ अर्थात् सन्ध्योपासन, ईश्वर की स्तुति प्रार्थना उपासना करना तथा (वेद का) पढ़ना-पढ़ाना और देव यज्ञ अर्थात् अग्निहोत्र एवं विद्वानों के संग का उपदेश किया है। मानव जीवन के प्रथम आश्रम का नाम ही ब्रह्मचर्य आश्रम है। श्री आर्य ने ऋषिवर द्वारा निर्दिष्ट तीनों कनिष्ठ, मध्यम और उत्तम प्रकार के ब्रह्मचर्य की चर्चा की और कहा कि जो भी विद्या और शुभ गुणों से विभूषित होना चाहता है वह न्यून से न्यून २४ वर्ष पर्यन्त जितेन्द्रिय ब्रह्मचारी रहकर वेदादि विद्या और सुशिक्षा का ग्रहण करे। विवाह करके भी लम्पटता न करे तो उसके शरीर में प्राण बलवान होकर शुभ गुणों का वास कराने वाले होते हैं। मध्यम ब्रह्मचर्य यह है कि मनुष्य ४४ वर्ष पर्यन्त ब्रह्मचारी रहकर वेदाभ्यास करता है, उसके प्राण, इन्द्रियाँ, अन्तःकरण और आत्मा बलयुक्त होके, सब दुष्टों को रुलाने और श्रेष्ठों का पालन करने के सामर्थ्य वाले होते हैं। उत्तम ब्रह्मचर्य ४८ वर्ष पर्यन्त का तीसरे प्रकार का होता है। जो ४८ वर्ष पर्यन्त यथावत् ब्रह्मचर्य करता है। उसके प्राण अनुकूल होकर सकल विद्याओं का ग्रहण करते हैं। महर्षि के कहने का भाव यह है कि विद्या एवं शुभ गुणों की प्राप्ति का ब्रह्मचर्य पालन के साथ सीधा सम्बन्ध है। आचार्य और माता-पिता के लिए महर्षि का यही आदेश है कि वे अपने सन्तानों को प्रथम वय (आश्रम) में विद्या और गुण-ग्रहण के लिए तपस्वी बनावें और वे सन्तान भी आप ही आप अखण्डित ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए सब प्रकार के रोगों से रहित होकर पुरुषार्थ चतुष्टय (धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष) के अधिकारी बने।

विद्याध्ययनकाल में सुख की कामना करना विद्या प्राप्ति में एक प्रकार की बाधा है। जो विद्या पढ़े और पढ़ावें, वे निम्नलिखित दोषों से बचें-

आलस्यं मदमोहौ च चापल्यं गोष्ठिरेव च।
स्तब्धता चाभिमानित्वं तथाऽत्यागित्वमेव च।
एते वै सप्तदोषाः स्युः सदा विद्यार्थिनां मताः ।।
सुखार्थिनः कुतो विद्या नास्ति विद्यार्थिनः सुखम्।
सुखार्थी वा त्यजेद्विद्यां विद्यार्थी वा त्यजेत्सुखम्।।

अर्थात् आलस्य, नशा करना- मूढ़ता, चपलता, व्यर्थ इधर-उधर की अण्डबण्ड बातें करना, जड़ता-कभी पढ़ना, कभी न पढ़ना, अभिमान और लोभ-लालच ये सात (७) विद्यार्थियों के लिए विरोधी दोष हैं। जिसको सुख-आराम भोगने की इच्छा है, उसको विद्या कहाँ और जिसका चित्त विद्याग्रहण करने में लगा है उसको विषय सम्बन्धी सुख चैन कहाँ? इसलिए विषय सुखार्थी विद्या को छोड़े और विद्यार्थी विषय सुख से अवश्य अलग रहें। नहीं तो परमधर्म रूप विद्या का पढ़ना-पढ़ाना कभी नहीं हो सकेगा। विद्या प्राप्ति के लिए तपश्चर्या वाला जीवन होना चाहिए।

विद्याध्ययन करने वालों के अभ्यास में किसी प्रकार का व्यवधान न आए और निरन्तरता बनी रहे, उसके लिए महर्षि जी ने तैत्तिरीयोपनिषद् (शिक्षावल्ली, अनुवाक-९) का वचन उद्धृत किया है- **"ऋतं च स्वाध्यायप्रवचने च........ प्रजातिश्च स्वाध्यायप्रवचने च।"** यह पढ़ने-पढ़ाने वाले के लिए नियम है-यथार्थ आचरण से पढ़ें और पढ़ावें, सत्याचार से सत्यविद्या को पढ़ें तथा पढ़ावें, तपस्वी अर्थात् धर्मानुष्ठान करते हुए वेदादि शास्त्रों को पढ़ें और पढ़ाते जावें, मन की वृत्ति को सब प्रकार के दोषों से हटा के पढ़ते-पढ़ाते जायें, अग्निहोत्र करते हुए पठन-पाठन करें और करावें, अतिथियों की सेवा करते हुए पढ़ें और पढ़ावें, सन्तान और राज्य का पालन करते हुए पढ़े और पढ़ाते जायें। इति।।

जैसे विद्वान् लोग ईश्वर की सृष्टि में विद्या से पदार्थों की परीक्षा करके कार्य्यों में उपयोग कर सुखों को प्राप्त करते हैं वैसे ही सब मनुष्यों को इस यज्ञ का अनुष्ठान कर सब सुखों को पहुँचाना चाहिये।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ५.२२

thearyasamaj.org

आर्यजगत् के समाचार

१. वेद कथा सम्पन्न- आर्यसमाज दयानन्द मार्ग, भीलवाड़ा के सक्रिय सदस्य रामकृष्ण छाता एवं उनके सुपुत्रों ने आर्यसमाज के तत्त्वावधान में त्रिदिवसीय वेद कथा तथा २१ कुण्डीय यजुर्वेद पारायण महायज्ञ करवाया। यह कार्यक्रम २६ से २८ दिसम्बर २०१४ तक शहर के मध्य में स्थित आजाद चौक प्रांगण में सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आचार्य आनन्द पुरुषार्थी रहे तथा गुरुकुल भुसावर की ब्रह्मचारिणियों ने सुन्दर वेद पाठ किया।

२. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज कोलकाता का १२९वाँ वार्षिकोत्सव २० से २८ दिसम्बर २०१४ पर्यन्त आम्हर्स्ट स्ट्रीट अवस्थित ऋषिकेश पार्क में हर्षोल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ। इस उत्सव में पं. बंगाल प्रान्त के अतिरिक्त झारखण्ड, बिहार, उत्तर प्रदेश, एवं नेपाल से भी सैकड़ों जन उपस्थित हुए। आमन्त्रित विद्वत्गण थे- आचार्य डॉ. धर्मवीर (अजमेर), श्री कुलदीप विद्यार्थी (बिजनौर)।

३. वार्षिक उत्सव मनाया- आर्यसमाज, सेक्टर-६, भिलाई, दुर्ग, छ.ग. का त्रिदिवसीय ५५वाँ वार्षिकोत्सव १९ से २१ दिसम्बर २०१४ को सम्पन्न हुआ। इसके साथ ही अथर्ववेद पारायण महायज्ञ की पूर्णाहुति भी सम्पन्न हुई। इस कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर हवन, भजन एवं प्रवचन का कार्यक्रम सियान सदन, नेहरू नगर में भी आयोजित किया गया।

४. वेद प्रचार- आर्य केन्द्रीय सभा जबलपुर, म.प्र. के द्वारा वेद प्रचार का विशाल आयोजन दि. १४ से १६ नवम्बर २०१४ को आदर्श नगर के मैदान में सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम के अन्तर्गत ५१ कुण्डीय सर्वकल्याण महायज्ञ, सुमधुर भजन तथा माननीय गहन चिन्तनपरक वैदिक सिद्धान्तमय प्रवचन प्रातः सायं दोनों समय आर्यजगत् के विद्वान् आचार्य डॉ. वागीश शर्मा (यज्ञतीर्थ एटा) के पावन सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। जबलपुर के सभी समाजों से पधारे सदस्यों व शहर के सैकड़ों गणमान्य जनसमूह के मध्य कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

५. वेद का विमोचन- आर्यसमाज सम्भाजीनगर (औरंगाबाद-महा.) की ओर से आर्यसमाज के उपप्रधान सौ. सविता बलवन्तराव जोशी द्वारा ऋग्वेद का मण्डल १ का प्रकाशन अन्तराष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन दिल्ली में विमोचन हुआ था। अबकी बार हैं हैदराबाद मुक्ति संग्राम के शहीद वेदप्रकाश के गाँव गुंजोटी, तह. उमरगा, जि. धाराशिव में आर्यसमाज भवन के उद्घाटन समय पर ऋग्वेद मण्डल २ एवं ३ का विमोचन पू. स्वामी धर्मानन्द महाराज (आमसेना गुरुकुल ओड़िशा), प्रो. धर्मवीर (अजमेर) के करकमलों द्वारा किया गया।

६. स्वामी श्रद्धानन्द दिवस मनाया- आर्यसमाज खेड़ा अफगान, सहारनपुर में स्वामी श्रद्धानन्द दिवस का कार्यक्रम बड़े उत्साह और उल्लास से मनाया। इस अवसर पर श्री अनुज कुमार शास्त्री ने यज्ञ कराया, यजमान श्री वीरेन्द्र कुमार और उनकी धर्मपत्नी विजय लक्ष्मी गुप्ता रहे।

७. यज्ञ सम्पन्न- वैदिक धर्म प्रचारिणी सभा, पलवल, हरियाणा के तत्त्वावधान में १६ से २१ दिसम्बर २०१४ तक यजुर्वेद व सामवेद पारायण महायज्ञ व वैदिक सत्संग का आयोजन किया गया। वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रदेव ने यज्ञ ब्रह्मा की भूमिका निभाई, श्री कृष्ण आर्ष गुरुकुल गौमत (देवालय) जि. अलीगढ़ के विद्यार्थियों ने सस्वर वेद पाठ किया।

८. बलिदान दिवस मनाया- आर्यसमाज मगरा पुंजला, जोधपुर में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस दि. २३ दिसम्बर २०१४ को मनाया गया। यज्ञ के ब्रह्मा श्री राजेन्द्र प्रसाद वैष्णव थे। उन्होंने यज्ञ के महत्त्व को समझाया तथा पं. श्री विमल शास्त्री ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन के बारे में विस्तार से बताया। कार्यक्रम का संचालन प्रचार मन्त्री श्री अर्जुनसिंह गहलोत द्वारा किया गया।

९. बलिदान दिवस सम्पन्न- आर्यसमाज खलासी लाईन, सहारनपुर के प्रांगण में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में विशेष यज्ञ हुआ। यज्ञ में मुख्य यजमान डॉ. राजवीर सिंह वर्मा सपत्नी रहे। यज्ञ सुरेन्द्र कुमार चौहान एवं राजकुमार आर्य के संयुक्त पुरोहित्य में हुआ।

१०. स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया- आर्यसमाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. में २३ दिसम्बर २०१४ को यज्ञ के साथ स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री गणपतलाल आर्य, प्रधान आर्य जिला उपप्रतिनिधि सभा भीलवाड़ा व मुख्य अतिथि श्री जयसिंह, भाणेजबना, राजपरिवार शाहपुरा रहे। इस अवसर पर श्री चन्द्रप्रकाश झंवर ने म.शि. केन्द्र के

thearyasamaj.org

सभी विद्यार्थियों को स्वेटर वितरित किये।

११. वार्षिकोत्सव सम्पन्न- आर्यसमाज मन्दिर, कायमगंज, फर्रुखाबाद, उ.प्र. का वार्षिकोत्सव दि. २६ से २८ दिसम्बर को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया, जिसमें वैदिक विद्वान् आचार्य वेदप्रकाश व्याकरणाचार्य बिजनौर, पं. योगेशदत्त भजनोपदेशक, बिजनौर आदि पधारे।

१२. अभिनन्दन- आर्यसमाज के उपदेशक एवं भजनोपदेशक, जिनकी आयु ६० वर्ष अथवा उससे ज्यादा हो गयी है, हम उन सबका इसी वर्ष में अभिनन्दन करेंगे। आप अपना फोटो, कार्यक्षेत्र, अन्य सूचना भेजें। एक पुस्तिका भी छापी जायेगी।

सम्पर्क- ठाकुर विक्रम सिंह, ए-४१, द्वितीय तल, लाजपत नगर-द्वितीय, निकट लाजपत नगर मेट्रो स्टेशन, नई दिल्ली-११००२४

१३. सम्मानित- आर्यसमाज शाहपुरा, जि. भीलवाड़ा, राज. के नेतृत्त्व में विशाल वृष्टि यज्ञ एवं अलग-अलग स्थानों (गली, मोहल्लों) में पारिवारिक यज्ञों का आयोजन करने से वायु शुद्धि द्वारा पर्यावरण संरक्षण में सहयोग व उत्कृष्ट कार्य करने से आर्यसमाज के मन्त्री श्री सत्यनारायण तोलम्बिया को गणतन्त्र दिवस समारोह-२०१५ में उपजिला कलेक्टर एवं पालिका प्रशासन द्वारा उपखण्ड स्तर पर सम्मानित किया गया।

१४. स्वाइन फ्लू के लिए विशेष हवन- दि. ३ फरवरी २०१५ को वैदिक वीरांगना दल के द्वारा बी-१२३, मालवीय नगर, जयपुर, राजस्थान में स्वाइन फ्लू को समाप्त करने के लिए एक विशेष हवन का आयोजन किया गया। इस हवन को श्री यशपाल यश द्वारा सम्पन्न कराया गया। वैदिक वीरांगना दल की राष्ट्रीय अध्यक्षा कुमारी अनामिका शर्मा एवं संस्था की संरक्षिका श्रीमती दुर्गा शर्मा ने बताया कि इस हवन को कराने के लिए विशेष औषधियों का प्रयोग किया गया जैसे- गूगल, सास के बीज, नीलगिरी के पत्ते, देवदास का बुरादा, पीली सरसों, कछनार, मजीठ, गिलोई, नीम के पत्ते, सफेदा के पत्ते के अतिरिक्त कई तरह की औषधियाँ व सुगन्धित सामान आदि। यह हवन पूर्ण रूप से गाय के घी के प्रयोग से सम्पन्न कराया गया। जिस स्थान पर यह हवन किया जाता है उस स्थान के आसपास ३०० से ४०० मीटर तक की दूरी पर स्वाइन फ्लू के जीवाणु नष्ट हो जाते हैं और यह वैज्ञानिक तौर पर भी सही है। यह हवन आगे भी नियमित जारी रहेगा। इस सम्बन्ध में कोई भी व्यक्ति चलभाष संख्या-०९८२९६६५२३१ पर सम्पर्क कर सकते हैं।

वैवाहिक

१५. वर चाहिये- आर्यसमाज परिवार की सुन्दर, संस्कारित पुत्री आयु २१, वर्ण-गौरवर्ण, शिक्षा-शिक्षा शास्त्री अध्ययनरत, कन्या गुरुकुल वाराणसी, उ.प्र. के लिए आर्यसमाजी परिवार का वर चाहिए।

सम्पर्क-०९९३९२०८२८१, ०८०८३००४७५७

ई-मेल - krishnakumarsingh183@gmail.com

१६. वर चाहिये- वैदिक परिवार की सुन्दर, स्वस्थ, संस्कारी, गृहकार्य में दक्ष युवती जन्म-१९/११/१९८३, कद-५ फुट ४ इंच, वर्ण-गेहूंआ, शिक्षा-एम.ए., बी.एड., निवासी दिल्ली के लिए गुरुकुलीय स्नातक या आर्यसमाजी परिवार का दहेज रहित विवाह हेतु वर चाहिए।

सम्पर्क-०९८१०७९६२०३

ई-मेल - ekomkaar.rpsharma@gmail.com

१७. वर चाहिये- भारतीय मूल की लन्दन (इंग्लैण्ड) निवासिनी ४६ वर्षीय, स्वस्थ, सुन्दर, सुशिक्षित एवं सुशील, अविवाहित युवती के लिए स्वस्थ, सुशिक्षित, बुद्धिमान्, आर्य प्रवृत्ति का वर चाहिए। **सम्पर्क- प्रा.सो. आचार्य ००४४-०२०८-९९११७३२, ००४४-०७४१-९११०५५२**

ई-मेल - acharyasonerao@gmail.com

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

thearyasamaj.org

thearyasamaj.org

आर जे/ए जे/80/2015-2017 तक प्रेषण : २८ फरवरी , २०१५ ३९५९/५९

पं. लेखराम बलिदान दिवस (६ मार्च)

प्रेषक:
परोपकारिणी सभा
दयानन्द आश्रम, केसरगंज, अजमेर
(राजस्थान) - ३०५००१